की जिंदगी

पीठ प्राइवेट लिमिटेड, पटना ४

मौत की जिंदगी

(बालोपयोगी उपन्यास)

प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त'

ज्ञानपीठ (प्राइवेट) लिमिटेड

पटना—४

प्रकाशक

ज्ञानपीठ (प्राइवेट) लिमिटेड,

खजांची रोड, पटना-४

मूल्य

सवा रुपया मात्र

(१·२५ नए पैसे)

मुद्रक

तारकेश्वर पांडेय

ज्ञानपीठ (प्राइवेट) लिमिटेड,

पटना ४

अभिप्राय

कहानियों और उपन्यासों में मन को आकर्षित कर लेने की जैसी शक्ति है, वैसी साहित्य की संभवतः अन्य किसी शाखा में नहीं है। यही कारण है कि कहानियों और उपन्यासों के पाठकों की संख्या सभी देशों और सभी समाजों में अन्य विषयों के पाठकों की अपेक्षा बहुत अधिक होती है। बालकों का मन चूँकि विकसित अवस्थाओं की अपेक्षा अधिक कोमल और ग्रहणशील होता है, अतः स्वाभाविक है कि वे इनमें और ज्यादा रम जायें। शायद ही कोई ऐसा बच्चा हो, जिसने बचपन में, कहानियाँ सुनाने के लिए, अपनी दादी-नानियों की हजार मिन्नत-खुशामदें न की हों और जिसकी हर नींद की शुरुआत कहानियों के अंत के साथ न होती रही हो।

कहानियों के साथ जिन्होंने जीवन का आरंभ किया है, कहानियों के जरिए ही, देश के उन भावी कर्णधारों को अधिक-से-अधिक शिक्षित और उन्नत बनाया जा सकता है। लेकिन, कुछ समय पहले तक जैसे हमारा देश जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने को पंगु और हतप्रभ पाता आया है, वैसे ही उसने बालकों के मानसिक विकास के लिए कभी कुछ सोचने-विचारने का या कुछ नवीन योजनाएँ बनाने का ध्यान नहीं रखा। बच्चों के लिए साहित्य तो बहुत लिखा गया—लेकिन कहानियों में किसी की कल्पना राक्षस, परियों, बिल्ली और बंदर से आगे नहीं बढ़ सकी। उपन्यास तो अबतक लड़कों के लिए हिंदी में शायद लिखे ही नहीं गए—लिखे भी गए हों, तो उनका वैसा प्रचार नहीं हुआ—संभवतः इस कारण कि बच्चों के हृदय को छू न सके हों।

विदेशी भाषाओं में ठीक इससे उलटी बात है बालकों की और मनोविज्ञान के अनुकूल कोई ऐसा विषय नहीं, जिस पर उन भाषा में सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ और उपन्यास न प्रकाशित हुए हों। प्र पुस्तक एक ऐसी ही अंग्रेजी पुस्तक का बिलकुल स्वतंत्र अनुवाद अनुवाद में वातावरण को भारतीय ढाँचे में डालने के लिए जि स्वतंत्रता मैंने ली है--यानी कथानक मूल लेखक का है, कहने का और भाषा मेरी। पुस्तक में मनोरंजकता है, रहस्य है, हास्य और क है और उपदेशकता कहीं नहीं है--फिर भी ऐसे स्थल हैं, जहाँ स्वभ इसके बाल पाठकों का हृदय स्वदेश-प्रेम, स्वावलंबन, पर-दुःख-कात और कष्ट में पड़े हुओं की सहायता करने के उदात्त भावों से भर उठे मेरा विश्वास है, जो भी बालक इस पुस्तक को पढ़ेगा, इसे बार पढ़ना चाहेगा और इसे पढ़कर अपने मन के खजाने में वह ऐसी इकट्ठी कर सकेगा, जो उसके भविष्य के निर्माण में बहुत सहायक हो सकेगी। मैं चाहता हूँ, जिन लोगों के लिए यह पुस्तक लिखी ग उनमें इसका अधिकाधिक प्रचार हो और ऐसी पुस्तकें पढ़ने की उनकी रुचि बढ़े, ताकि हिंदी के अधिकारी लेखकों के द्वारा इस तरह और भी (और मौलिक भी) पुस्तकें हिंदी-साहित्य में आवें।

अंग्रेजी की जो मूल पुस्तक मुझे मिली थी, उसकी एक ही जिल दो उपन्यास थे ; लेकिन वह प्रति इतनी पुरानी, सड़ी-गली और फटी-पु थी कि उपन्यास के लेखक का नाम जानकर उनके प्रति कृतज्ञता-प्रक का भी उपाय मेरे पास नहीं है, जिसके लिए मुझे आंतरिक खेद है।

—[illegible] ओझा 'मु

मौत की ज़िन्दगी

[बालोपयोगी उपन्यास]



बिजली की कड़क से घोड़ी उछलकर लौ
राज-रप्पा की तरफ वापस भाग

१

आसमान सबेरे से ही झप्सा हो आया था और थोड़ा दिन चढ़ते न चढ़ते तो झमाझम बारिश होने लगी। बच्चों को आज पूरी आज़ादी थी, क्योंकि उनके पिता-माता पिछले दिन किसी जरूरी काम से शहर चले गए थे। घर में एक बूढ़ी बुआ थीं और एक नौकरानी! नौकर पिता-माता के साथ ही शहर गया हुआ था।

नीलम सबसे बड़ी थी, बारह साल की। गगन दस साल का था। मिनी और बादल दोनों जुड़वें थे और अभी सातवें में रेंग रहे थे। पिता अपने बच्चों को खुद ही पढ़ाते थे, इसलिए उनकी गैरहाजिरी बच्चों के लिए अपने आप तातील बन गई थी; बदली-पानी की वजह से घूमने-फिरने का सुभीता भी न था। इसलिए नीलम और गगन पिता की लाइब्रेरी में जाकर कैरम खेलने लगे, मिनी बुआ के पास रसोई-घर में जा बैठी और अपने कभी न खत्म होनेवाले सवालों से उन्हें परेशान करने लगी। बादल अकेला पड़ गया तो दुमंजिले की खिड़की पर जा बैठा और रिम-झिम बारिश का नजारा देखने लगा।

अचानक उसकी नजर सामनेवाले मकान की खिड़की पर पड़ी उसने देखा, दोनों कुहनियों को खिड़की पर टिका, हाथों पर माथा रखे दो बच्चे चुपचाप बाहर की ओर देख रहे हैं। बादल को कौतूहल हुआ, क्योंकि उस मकान और उसमें रहने-वाली एकमात्र बूढ़ी दादी से वह अच्छी तरह परिचित था। बादल ने जब से होश सँभाला था, वह उस मकान में अकेली

बूढ़ी दादी को देखता आया था अलबत्ता साल दो सा
कभी कभी उनके दूर के रिश्ते के भाई-भतीजे दो-एक हफ
लिए वहाँ आ टिकते थे, बादल उन सब को जानता था; ले
इन बच्चों को तो इसके पहले उसने कभी देखा नहीं
कौन हैं ये ? कहाँ से आए हैं ? कब आए हैं ? और क्यों
तरह सूनी-उदास आँखों से एकटक बाहर की ओर देख रहे
बादल मन ही मन यह सोचता और उनकी ओर देखता र
काफी देर हो गई, लेकिन न तो बच्चे अपनी जगह से हिले
न उन्होंने अपनी आँखें ही इधर-उधर फिराईं। उनकी उदास
को देखकर बादल का मन दुखी होने लगा। उनकी उदासी
वजह वह कुछ समझ न सका। तब वह अपने पिता की ला
में जाकर गगन, नीलम और मिनी को भी बुला लाया।

गगन यद्यपि नीलम से उम्र में छोटा था, फिर भी ल
होने की वजह से उसमें बड़प्पन का एक भाव स्वभावतः आ
था। थोड़ी देर खिड़की के बच्चों की ओर कौतूहल से दे
रहकर उसने कहा—"कल तक तो ये बच्चे बूढ़ी दादी के
आए नहीं थे, क्योंकि कल जब उन्होंने हम लोगों को जा
खिलाने के लिए अपने बगीचे में बुलाया था तो हम लोगों ने ज
उन्हें देखा होता।"

"शायद वे रात में आए हों।" नीलम ने कहा—"मुझे
ऐसा ही जान पड़ता है।"

गगन बोला—"हाँ, अगर कल सबेरे वे वहाँ नहीं थे
जरूर दोपहर को या शाम को आए होंगे। दोपहर के बाद
हम लोग उधर गए नहीं।"

अपनी बात कटती देख नीलम को कुछ बुरा तो जरूर ल
लेकिन वह चुप रही। फिर भी उसके मन ने स्वीकार नहीं कि
कि वे दोपहर या शाम को उस मकान में आए होंगे, क्यों

ऐसा होता तो ये इससे पहले उन्हें उसी खिड़की पर देख सकते थे।

थोड़ी देर सब लड़के खिड़की के उन बच्चों की ओर चुपचाप देखते रहे। मिनी और बादल छोटे थे, इसलिए वे खिड़की पर झुके हुए थे; नीलम और गगन उनके पीछे खड़े थे। अचानक मिनी ने कहा—"बेचारे कितने दुखी और उदास दीख पड़ते हैं! जाने क्या बात है।"

गगन बोला—"बात क्या है! शायद वे देहात में पहली बार आए हैं और बारिश उन्हें अच्छी नहीं लगती और खास तौर से पहले ही दिन, जब वे देहात की खुली हवा में घूमना-फिरना ज्यादा पसन्द करते।"

मिनी जानती थी कि गगन को खुद भी बूँदो-पानी अच्छा नहीं लगता, इसीसे सबके लिए वह वैसा ही समझता है, लेकिन मिनी का मन इस बात की गवाही नहीं देता था कि उन बच्चों की यह गहरी उदासी सिर्फ खराब मौसम की वजह से है, फिर भी वह चुप लगा गई, क्योंकि नीलम की तरह बात-बात पर बहस करने की उसकी आदत नहीं थी।

थोड़ी देर बाद बादल ने एकाएक कहा—"ऐसा जान पड़ता है कि दोनों बच्चे काफी देर तक रोते रहे हैं, क्योंकि उनकी आँखें सूजी-सी जान पड़ती हैं और चेहरा मुरझाया हुआ है।"

गगन ने गंभीरता से कहा—"हो सकता है कि वे मातम मना रहे हों।"

"मातम!" बादल ने भौंहें सिकोड़ते हुए पूछा—"मातम क्या होता है?"

गगन और नीलम, बड़े होने की वजह से, हमेशा मिनी और बादल से बचपन-भरे सवालों का बड़े प्यार से जवाब दिया करते थे और जो बात उनकी समझ में न आती, समझा दिया करते थे; लेकिन इस नए खयाल ने उनको कुछ ऐसी गंभीर चिन्ता में डाल

दिया था कि वे बादल के सवाल का जवाब देना भूल से गए
तब मिनी ने अपना बड़प्पन जाहिर करते हुए कहा जब कि
का कोई खो जाता है, तब लोग मातम मनाया करते हैं।"

इस जवाब ने, लेकिन, बादल को और भी उलझन में डा
दिया। उसने पूछा—"तो उनका कौन खो गया है? अ
पिछली बार जब शहर के मेले में मैं खो गया था, तब तो तु
लोगों में से किसी ने मातम मनाया ही नहीं था।"

अब मिनी ने प्यार से बादल के गाल पर एक हल्का थप
लगाते हुए कहा—"वह और बात थी रे! तू तो खोया तो फि
मिल भी गया। मेरा मतलब वैसे खोने से नहीं था। मैं कह र
थी कि जब किसी का कोई मर जाता है, तब मातम मना
जाता है।"

"ओ, तो शायद उन बच्चों का कोई मर गया है!" बादल
बहुत उदास और उससे ज्यादा गंभीर होकर फुसफुसाती आवा
में कहा, मानो उसे डर हो कि वे बच्चे उसकी बातें सुन न लें-
"हो सकता है कि उनके माँ और बाप और तमाम भाई-बहन
गए हों।"

"अरे नहीं, नहीं, इतने सब भी क्या एक साथ मर सक
हैं!" मिनी ने बादल की बात से घबराकर कहा—"हो सक
है कि उनकी कोई छोटी बहन मर गई हो।"

"या मेरे जैसा कोई छोटा भाई मर गया हो, जिसे वे दो
बहुत प्यार करते रहे हों।" बादल ने कहा।

मिनी ने स्वीकार किया कि हाँ, ऐसा भी हो सकता है अं
प्यार से अपने छोटे भाई को चूम लिया—बादल मिनी से दो-ती
घंटे बाद पैदा हुआ था, इसलिए सबसे छोटा माना जाता था अं
सभी उसे बहुत प्यार करते थे। बादल की बातों ने सबको थो
देर के लिए बहुत उदास बना दिया। सभी मन ही मन उन दो

बच्चों के बारे मे तरह तरह के अटकल लगाने लगे

अचानक बादल ने पूछा—"नीलू दीदी, उन दोनों में से एक लड़की है और दूसरा लड़का, या दोनों लड़कियाँ हैं या दोनों ही लड़के हैं ?"

नीलम ने कहा—"दोनों में जो छोटा है, वह लड़का है और बड़ी वाली लड़की है। देखो, छोटे के केश छोटे छँटे हुए हैं, बड़ी के लबे हैं।"

गगन बोला—"तुम्हारा खयाल गलत है—वे दोनों ही लड़कियाँ हैं। आजकल छोटी लड़कियो के भी केश छँटवाने का रिवाज चल पड़ा है! इसके अलावा छोटी बच्ची रो भी रही है। लड़कियाँ ही ज्यादातर रोया करती हैं।"

नीलम ने कहा—"आः, बड़े पहचानने वाले! मैं कहती हूँ, वह जरूर लड़का है। लड़के भी अक्सर रोया करते हैं। क्यों बादल ?"

बादल ने बूढ़ों की-सी गंभीरता से कहा—"हाँ, जब उनकी बड़ी बहनें उन्हें ज्यादा तंग करती हैं।"

इस बात पर सभी हँस पड़े। बादल जवाब देने के ऐसे मौके कभी नहीं चूकता था।

लेकिन यह सवाल तो फिर भी ज्यों-का-त्यों ही रह गया कि या उन दोनों बच्चों मे से एक लड़का है और दूसरी लड़की या दोनों लड़के हैं या दोनों लड़कियाँ ही हैं; क्योंकि नीलम को जैसे इस बात का विश्वास था कि एक लड़की है, दूसरा लड़का; उसी तरह गगन को भी पक्का खयाल था कि दोनों लड़कियाँ ही हैं। लेकिन इस बात मे किसी को शक नहीं था कि छोटा बच्चा सुबक-सुबककर रो रहा था और बड़ी लड़की उसे थपथपाकर दिलासा दे रही थी।

नीलम ने कहा—"देखो, छोटे लड़के ने अपनी बहन की गोद

में सिर रख दिया है और वह उसे थपथपाकर दिलासा दे॰
कोशिश कर रही है।"

और इसे सभी बच्चों ने देखा कि उसकी कोशिश बेकार
गई, क्योंकि अब वह चुपचाप बहन की गोद में पड़ा था
उसके कंधे हिल नहीं रहे थे, जिससे जान पड़ता था कि
उसकी सुबकियाँ बन्द हो गई हैं।

इसके बाद लड़की फिर खिड़की पर झुक गई। ओः, ः
चेहरे पर कैसी गहरी उदासी थी! उसकी आँखें कैसी डबड
हुई थीं और उन सूनी-उदास आँखों से किस बेबसी के साथ
खिड़की से बाहर देख रही थी!!

लगभग एक घंटा बीत गया, वह लड़की अपनी जग
हिली तक नहीं। ये बच्चे भी उसे उसी तरह देखते रहे। ब
बीच में उनमें से दो-एक अगर कहीं इधर-उधर चले भी जा
फिर तुरत लौटकर खिड़की पर पहुँच जाते। उन दोनों अन
बच्चों ने इन लोगों को इस कदर अपनी ओर खींच लिया था
उनके बारे में लगातार ये बेसुमार बहसें करके भी किसी न
पर नहीं पहुँच पाते थे।

बूढ़ी दादी के घर आए दोनों बच्चों की बाबत बुआ भी
नहीं बतला सकीं, बल्कि जब नीलम ने उनसे यह कहा कि वे
चलकर बच्चों को देख लें, उसके पहले उन्हें यह मालूम तक
था कि बूढ़ी दादी के घर कोई बच्चे आए हैं। उन्होंने कह
"नीलू बेटी, अगर मैं भी तुम्हारी तरह खिड़की पर बैठ
बच्चों को देखती फिरूँ तो मेरी जान को ये तमाम काम जो
हैं, उन्हें कौन करेगा? मैं तो समझती हूँ कि तुम लोगों को
अब नीचे चलकर पढ़ना-लिखना या खेलना चाहिए।"

बुआ ने यह बात कहने भर को ही कही थी, नहीं तो मन
मन वे खुश थीं कि बच्चे यहाँ उलझे हुए हैं तो उनकी जान

बची है। नीचे उतरेंगे तो उन्हें चैन लेना मुश्किल हो जायगा। आखिर नीलम के साथ उन्हें खिड़की तक जाकर बच्चों को देखना भी पड़ा। यद्यपि उनकी धुँधली आँखें बच्चों को ठीक तौर से नहीं देख सकीं, लेकिन फिर भी उन्हें उन बच्चों में खासी दिलचस्पी हो आई। उन्होंने कहा—"बेचारे बच्चे! बेशक वे बड़े उदास दीख पड़ते हैं।"

बुआ उनके बारे मे इससे ज्यादा कुछ नही कह सकी; लेकिन इतना तो ये बच्चे बहुत पहले ही जान चुके थे।

नीलम ने कहा—"मेरा तो जी होता है कि बूढ़ी दादी के यहाँ जाकर पूछूँ कि वे लड़के कौन हैं, कहाँ से आए हैं और क्यों इतने उदास हैं? उन्हें तो जरूर इसकी वजह मालूम होगी।"

बुआ ने कहा—"नहीं बेटी, तुम क्या अपने बाबूजी की यह हिदायत भूल गई कि जब बूढ़ी दादी के यहाँ अनजान बच्चे आवें, तब तुम लोगों को उनके यहाँ न जाना चाहिए? एक तो इस वक्त बारिश हो रही है, फिर तुम्हारे बाबूजी भी घर पर नहीं हैं—तुम्हें उनकी बात टालकर बूढ़ी दादी के घर इस वक्त हरगिज न जाना चाहिए।"

नीलम ने जरा झुँझलाकर कहा—"लेकिन ऐसा तो नहीं जान पड़ता कि इनमें से किसी को चेचक या खाँसी या और कोई छूत की बीमारी हुई हो।"

बुआ ने कहा—"हाँ बेटी, यह तो ठीक है, लेकिन तुमको याद होगा कि पिछले जाड़ों में जो बच्चा उनके यहाँ आकर ठहरा हुआ था, उसे भी कोई बीमारी नहीं थी; फिर भी वहाँ आने के दो दिनों के अन्दर ही उसे गोटी निकल आई थी। मैं चाहती हूँ कि तुम सब लोग इस बात का वादा करो कि तब तक तुम लोग वहाँ न जाओगी, जब तक मैं इस बात का पता न लगा लूँ कि वहाँ जाने में किसी तरह का कोई खतरा नहीं है।"

और नीलम, गगन तथा मिनी को वादा करना पड़ा कि ज
तक बुआ की इजाजत नहीं मिलेगा, वे बूढ़ी दादी के घर की अ
कदम न रखेंगे। यह वादा बादल ने भी जरूर किया होता, अग
वह इस वक्त जरा देर के लिए बगीचे में न चला गया होता।
बुआ को बच्चों से यह वादा करा लेना जरूरी था। बात यों हु
कि पिछले जाड़ों में बूढ़ी दादी का एक छोटा नाती उनके य
इसलिए भेज दिया गया था कि चेचक से, जो उसके घर के व
लोगों को हो रहा था, उसका बचाव हो सके। लेकिन चेचक व
छूत वह अपने साथ लेता आया था और यहाँ आने के दो दि
के अन्दर ही उसे भी चेचक निकल आया। इस बीच नीलम
लेकर बादल तक ने उस बच्चे से खासी दोस्ती कर ली थी
औरों को तो नहीं, लेकिन मिनी को भी दो एक दिन ब
चेचक निकल आया—वह कुछ ऐसी कमजोर थी ही f
कोई भी बीमारी झटपट पकड़ लेती थी। उसी वक्त से उनके पि
ने अपने बच्चों को हिदायत दी कि जब कोई नया बच्
बूढ़ी दादी के यहाँ आवे तो तब तक वे उनके यहाँ न जायँ, ज
तक इस बात का पक्का भरोसा न हो जाय कि वह बच्चा अप
साथ कोई छूत नहीं लेता आया। इसलिए इस वक्त बुआ व
दुहरी खबरदारी की जरूरत थी, क्योंकि जैसा बच्चों का ख्या
है, यदि खिड़की पर के वे बच्चे सचमुच ही मातम में हों, तब त
इस बात की पूरी संभावना हो सकती है कि मरने वाला चेच
या खाँसी से भी किसी ज्यादा खतरनाक बीमारी से मरा हो।

बुआ तो बच्चों से वादा लेकर चली गईं और बच्चों ने फि
उसी खिड़की पर आसन जमाया। इस वक्त तक खिड़की के दोन
बच्चों में से छोटा गहरी नींद में सो गया था। बड़ी बहन बिन
हिले-डोले चुपचाप बैठी बाहर की ओर ताक रही थी और बीच
बीच में अपने छोटे भाई की पीठ थपथपा देती थी जान पड़

है कि इसी दरम्यान कोई आदमी उस कमरे के अन्दर भी आया था, क्योंकि लड़की ने अपने ओठों पर उँगली रखकर उसे चुप रहने का इशारा किया था और वह शायद चुपचाप उल्टे पाँवों लौट गया था।

दोपहर जब बीतने को आया तो छोटा बच्चा जाग पड़ा और फिर दोनों अगल-बगल बैठकर उसी उदासी और करुणा-भरी आँखों से बाहर की ओर देखने लगे। गगन यह दृश्य देखते-देखते ऊब गया था। उसने कहा—"नीलू, मुझसे तो अब देखा नहीं जाता। मैं और यहाँ ठहरूँगा तो खुद भी दुखी हो जाऊँगा। चलो, हम लोग बगीचे में चलकर आँख-मिचौनी खेलें।"

नीलम राजी हो गई। दोनों भाई-बहन नीचे उतर गए और थोड़ी देर बाद दूर से सुन पड़ने वाली उनकी हँसी ने गवाही दी कि कम से कम कुछ देर के लिए तो वे खिड़की के उन उदास बच्चों की याद जरूर भूल गए।

दिनभर पानी बरसने के बाद शाम को बारिश कुछ कम जरूर पड़ी, लेकिन बिलकुल बन्द नहीं हुई—हल्की-हल्की फुहि पड़ती ही रहीं। गगन दिनभर घर मे कैद रहने की वजह ः गया था और टहलने के लिए बाहर निकलना चाहता था उ जब उसने बुआ से नीलम के साथ थोड़ी देर बाहर टहल अ की इजाजत चाही तो उन्होंने इन्कार नहीं किया; क्योंकि दो बच्चों की तंदुरुस्ती खासी अच्छी थी और बुआ जानती थी थोड़ा भीग जाने पर भी पानी का उन पर कोई बुरा असर न पड़ सकता। फिर भी वे उन्हें यह चेताना न भूलीं कि वे अ जूते पहन लें और छाते ले लें, साथ ही सीधी सड़क से जा कीचड़-पानी में न जायँ।

खुशकिस्मती से मिनी और बादल ने बाहर जाने की क उत्सुकता न दिखाई। बुआ इससे खुश ही हुईं, क्योंकि उन दो की तंदुरुस्ती अपने बड़े भाई-बहनों की तरह अच्छी न थी अ पानी में भीगना उनके लिए नुकसानदेह हो सकता था। मि तो खैर, पानी-बूँदी से घबराती थी और कीचड़-कादो में उसे बा निकलना अच्छा ही न लगता था, लेकिन बादल चुपचाप ऊ की खिड़की पर बैठा अब भी उन्हीं बच्चों की ओर देख-देख मन-ही-मन एक स्कीम तैयार कर रहा था और दूसरी किसी ब की ओर ध्यान देने की उसे फुर्सत ही न थी।

गगन और नीलम जब कपड़े पहनकर बाहर जाने लगे मिनी ने मुँह विचका कर कहा—"ऊँह, सड़कें कैसी गन्दी औ कीचड़-कादो से भरी होंगी!"

गगन ने कहा—"इससे क्या! हम लोग मौज से नदी-किनारे टहलेंगे। नदी में इस वक्त कैसी बाढ़ आई होगी और कैसी मजेदार लहरें उठती होंगी!"

मिनी कुछ नहीं बोली, दोनों बच्चे बाहर निकल गए।

सड़क पर आकर दोनों ने देखा, बादल अभी तक ऊपर की खिड़की पर बैठा सामने वाले बच्चों को एकटक निहार रहा है। नीलम ने पुकार कर कहा—"बादू, उन बच्चों पर निगरानी रखना और अगर हमारे लौटने तक वे कुछ करें तो हम लोगों को बतलाना।"

बादल ने सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी। उसे इस बात की खुशी थी कि इस वक्त पूरी खिड़की पर उसी का कब्जा है। सच बात यह है कि चारों लड़कों में उन मातम मनाने वाले बच्चों के लिए सबसे ज्यादा फिक्र बादल को ही थी और जब से उसके तीनों भाई-बहन खिड़की छोड़कर चले गए थे, वह मन ही मन एक स्कीम तैयार कर रहा था और अब उसकी स्कीम के सफल होने का वक्त करीब आता जान पड़ता था।

× × ×

गगन वगैरह के पिता बाबू मनोहरलाल जाति के खत्री थे और लगभग दस साल विलायत में रह कर स्वदेश लौटे थे। आम तौर पर हिन्दुस्तान के जो लोग ज्यादा दिनों तक विलायत में रह कर अपने देश में वापस आते हैं, वे न सिर्फ रहन-सहन से, बल्कि दिल से भी 'साहब' बन जाते हैं—हिन्दुस्तानी लिबास, हिन्दुस्तानी तौर-तरीके, हिन्दुस्तानी भाषा और हिन्दुस्तानी लोग तक उन्हें पसन्द नहीं आते। देहातों से तो उन्हें नफरत ही होती है। अपने देश में भी वे विदेशी होकर रहना ही पसन्द करते हैं।

लेकिन बाबू मनोहरलाल वैसे आदमियों में से नहीं थे। विदेश में जाकर ही उन्होंने अपने देश की कीमत पहचानी थी।

विलायत के लोगों की स्वदेश-भक्ति, उनकी कर्मठता, व्यवहार-कुशलता, शिष्टता और सभ्य व्यवहार से वे प्रभावित हुए थे। वहीं उन्होंने यह भी देखा था कि देहात शहरों की बनिस्बत कितना ज्यादा लोभनीय हो सकता है। हम देहातो से घबराते हैं, जब कि विलायत वाले देहातों के लिए तरसते रहते हैं और फुर्सत पाते ही देहातों की ओर दौड़ पड़ते हैं। हमारे देहात नरक है, जब कि विलायत के देहात स्वर्ग। हमारे यहाँ के लोग देहातों में मजबूरी से रहते हैं, लेकिन विलायत वाले फुर्सत और आराम का वक्त शान्ति और सुख से बिताने के लिए शौकिया देहातो में रहते हैं। हमारे यहाँ के देहात गन्दगी, गरीबी और बीमारियों के घर हैं, जब कि विलायत के देहात तन्दुरुस्ती, खुशहाली और प्राकृतिक सुन्दरता की खान हैं। इसीलिए विलायत से लौटने पर बाबू मनोहरलाल ने शहर की तड़क-भड़क और मौज-आराम का खयाल छोड़कर देहात में रहने का निश्चय किया और हजारी बाग जिले मे, दामोदर नदी के पास, एक छोटे से गाँव में अपना मकान बनवाया और परिवार के साथ वहीं आकर रहने लगे। पटना में उनका पैतृक मकान था और एक अच्छी-खासी जमींदारी थी। उसके सिलसिले में उन्हें कभी-कभी शहर भी जाना पड़ता था।

विलायत से लौटने पर बाबू मनोहरलाल ने शादी की थी। उनकी पत्नी रमा देवी भी उन्हीं के समान ऊँचे विचारों की और सुशिक्षिता थीं। उनके चार बच्चे थे, जिनका परिचय हमारे पाठक पहले ही पा चुके हैं। बाबू मनोहरलाल और रमा देवी ने अपने बच्चों को सुशिक्षित, सच्चरित्र और स्वावलंबी बनाने के लिए सभी संभव प्रयत्न किए थे और उनकी देख-रेख में उनके बच्चे मन, वचन और कर्म से आदर्श-चरित्र बन रहे थे।

लेकिन बाबू मनोहरलाल ने सिर्फ अपने बच्चों की उन्नति

का ही ध्यान रखा हो, ऐसी बात नहीं थी। जिस गाँव में उन्होंने अपना नया मकान बनवाया था, उसका नाम था बजरा चट्टी। छोटा-सा गाँव था और आस-पास खूबसूरत, हरी-भरी पहाड़ियाँ, फैला मैदान और घना जंगल था। पूरब की ओर थोड़ी दूर पर दामोदर नदी बहती थी। बाबू मनोहरलाल ने लगभग पचास एकड़ जमीन खरीदकर वहाँ नए तरीके से खेती-बारी शुरू की थी। चट्टी और आस-पास के दूसरे गाँवों के लोगों को बुलाकर वे उन्हें खेती के नए-नए तरीके बतलाते, पशु-पालन के ढंग सिखाते तथा ऐसे उद्योग-धंधों की तालीम देते थे, जिससे गाँव के लोगों को खेती के अलावा और भी दो पैसों की आमदनी हो सके। नतीजा यह हुआ था कि पिछले दस बरसों की कोशिशों से बजरा तथा आस-पास के गाँवों के लोग खुशहाल हो गए थे, उनके खेतों की फसल पहले से दूनी हो गई थी, उनके गाँव साफ-सुथरे और खूबसूरत बन गए थे और उनके अपढ़ और नंग-धड़ंग बच्चे पढ़-लिखकर सभ्य और सुशील बनते जा रहे थे।

गगन और नीलम जब टहलने चले गए, बादल तब भी खिड़की पर बैठा सामनेवाले मकान के बच्चों की ओर देखता रहा। मन-ही-मन उसने तय कर लिया था कि वह चुपके-चुपके बूढ़ी दादी के घर जायगा और उन बच्चों से जान-पहचान करके उनकी उदासी की वजह जान लेगा। वह अपने साथ अपने कुछ खिलौने और तस्वीरोंवाली किताब भी ले जायगा। उनसे बच्चों का दिल बहलेगा और वे अपना दुःख भूल सकेंगे।

बात मन में पक्की हो गई थी। इन्तजार सिर्फ इस बात का था कि पानी खुल जाय तो वह बाहर निकले। इसके अलावा मिनी और बुआ की नजर से भी बचना जरूरी था। मिनी तो खैर, पिता की लाइब्रेरी में अपनी कहानियों की किताब में उलझी

थी—बुआ अभी बीच दरवाजे में बैठी हुई सिलाई कर रही थीं
थोड़ी देर में वे रसोई घर में जायँगी और तब बादल को अच्छ
मौका मिलेगा। तब तक शायद पानी भी खुल जाय।

लगभग आध घण्टे बाद बुआ उठीं और बच्चों का नाश्
तैयार कराने के लिए रसोई घर में चली गईं, लेकिन पानी अ
भी नहीं खुला था। हल्की-हल्की फुहियाँ पड़ रही थीं। बादल
सोचा, अब इन फुहियों की परवाह करने से काम नहीं चलेगा
वह खिड़की से उठकर गोल कमरे में आया, जहाँ बच्चों की किता
और खिलौने रहते थे और जो ही उनके पढ़ने का कमरा था
बादल ने सोचा था कि मैदान साफ होगा और वह चुपके
बाहर निकल जायगा; लेकिन कमरे में आकर उसने देखा वि
मिनी जाने कब से यहाँ आकर जम बैठी है और अपनी किता
में इस कदर डूबी हुई है कि बादल के आने की उसे आहट भ
नहीं मिली। बादल जब अपने खिलौने का बक्स और किता
निकालने लगा, तब मिनी ने उसकी ओर देखकर कहा—"तु
क्या लड़ाई का खेल खेलने जा रहे हो?"

बादल अपने जाने की बात मिनी को इस डर से नहीं बत
लाना चाहता था कि कहीं वह खुद भी चलने को तैयार न ह
जाय; और, इस मोर्चे पर वह अकेला ही जाना चाहता था; इस
से उसने अटपटा-सा जवाब दिया—"शायद! और शायद नह
भी।......छोटी लड़कियों को सवाल नहीं पूछने चाहिए।"

"वाह रे" मिनी ने बादल की गम्भीरता पर हँसते हुए कहा-
"मैं तो फिर भी तुमसे बड़ी ही हूँ। मुझे अगर तुम छोटी लड़की
कहोगे तो फिर तुम क्या होओगे?"

"मैं तो लड़का हूँ!" बादल ने गम्भीर बड़प्पन के भाव से
कहा और अपनी किताबें तथा बक्स सँभालता हुआ बोला—
"अच्छा, मैं चलता हूँ, मुझे फुर्सत नहीं है।"

बादल की बात से फिर मिनी को हँसी आ गयी। बादल बराबर घरभर का खिलौना रहा है। बूढ़ों जैसी उसकी बातें और जरूरत से ज्यादा गम्भीरता और बड़प्पन के बोल सुन-सुन कर हमेशा उसके घर वाले खुश होते रहे हैं। इसी से मिनी को उसकी बात से उसके इरादे का कुछ पता न चला। वह फिर अपनी किताब पढ़ने में लीन हो गयी।

बूढ़ी दादी की इन बच्चों से गहरी दोस्ती थी। उनके पति पादरी थे और ईसाई धर्म के प्रचार के लिए यहाँ आकर बस गए थे। उनके मरे पन्द्रह साल से ज्यादा हो रहे हैं और बूढ़ी दादी अब अकेली हैं। उन्हें दो तीन बच्चे हुए थे, लेकिन वे बचपन में ही जाते रहे। इसी से बच्चों के प्रति बूढ़ी दादी को बड़ा स्नेह है और वे गाँव भर के बच्चों को अपना ही बच्चा समझती हैं। उनके बँगले के पीछे एक खासा लम्बा-चौड़ा बागीचा है, जिसमें आम, अमरूद, जामुन वगैरह के पेड़ और तरह-तरह की फूल-पत्तियाँ हैं। जब पेड़ों में फल आते हैं तो गाँवभर के बच्चों को न्यौता देकर वे उन्हें पके-पके फल खिलाती हैं और खुश होती हैं। अभी कल ही बादल वगैरह उनके यहाँ न्यौता खा आए थे।

बूढ़ी दादी का घर बादल के घर से जितना नजदीक दीखता है, असल में उतना नजदीक है नहीं। बादल का घर एक ऊँची टेकरी पर है, जब कि बूढ़ी दादी का समतल जमीन पर। वहाँ तक पहुँचने के लिए गाँव की पक्की सड़क दो मोड़ खाकर जाती है। यों, एक पगडंडी सीधे भी नीचे उतर गई है; लेकिन बादल ने उससे जाना ठीक नहीं समझा, क्योंकि एक तो उस पर भीगी घास थी और फिर कीचड़ की वजह से फिसलने का भी डर था। इसीसे बादल ने सड़क के रास्ते से जाना ही बेहतर समझा।

बारिश इस वक्त बिलकुल बन्द हो गई थी, लेकिन काले-काले घने बादल अब भी आसमान पर छाए हुए थे और किसी

भी वक्त फिर गहरी बारिश होने का अन्देशा था, इसलिए बादल अपनी छोटी-छोटी टाँगों से ज्यादा-से-ज्यादा लंबे डग भरता हुआ बूढ़ी दादी के बँगले के फाटक पर जा पहुँचा। फाटक पर वह जरा देर के लिए ठिठका, क्योंकि यहाँ से खिड़की पर बैठे दोनों बच्चे साफ दीख रहे थे। बादल ने देखा कि नीलम का अन्दाज ही ठीक था, गगन की जिद गलत—दोनों में से बड़ी वाली लड़की थी, छोटा लड़का। दोनों की आँखों में ऐसी गहरी उदासी थी, उनके चेहरे इस कदर पीले पड़ गए थे कि देखने वाले का दिल उमड़ आए। लड़के की आँखें तो रोते-रोते लाल हो गई थीं और सूज भी गई थीं।

बादल फाटक पर खड़ा उनकी ओर देख ही रहा था कि अचानक खिड़की वाले लड़के की नजर उस पर पड़ गई। बालक को देखकर उसने अपनी बहन से कुछ कहा, क्योंकि तुरत ही वह भी बादल की ओर देखने लगी। उन बच्चों से आँखें मिलते ही बादल को अपना वहाँ खड़ा रहकर उनकी ओर घूरना भद्दा मालूम पड़ा और वह फाटक की कुंडी खोलकर अन्दर चला गया।

फाटक से बँगले तक का रास्ता तय करते हुए उसने सोचा कि चूँकि वह बूढ़ी दादी के पास नहीं आया है, इसलिए उनको पुकारना या खबर देना जरूरी नहीं है। वह सीढ़ी से चढ़कर सीधा ऊपर चला जायगा और खुद ही उनसे जान-पहचान कर लेगा। ऐसा ही उसने किया भी। ऊपर वाले कमरे के दरवाजे पर पहुँचकर उसने दरवाजे के किवाड़ों पर हाथ रखा ही था कि दोनों पल्ले खुल गए और खिड़की के बच्चे चौंककर बादल की ओर देखने लगे। बादल झेंप-सा गया। एक बगल में अपनी किताबें और दूसरे में खिलौनों का बक्स दबाए वह जहाँ का तहाँ खड़ा रहा। उसके मन मे आया कि वह गगन या नीलम या नहीं तो मिन्नी को भी साथ लाया होता तो अच्छा होता।

खिड़की वाले बच्चे भी पलभर बादल की ओर अचरज से देखते रहे; आखिर बड़ी लड़की ने कहा—"अन्दर आ जाओ। खड़े क्यों हो ?"

अब बादल को थोड़ी हिम्मत आई; बोला—"मैं तुम लोगों को देखने आया हूँ। मेरा नाम बादल है। मैं उस सामने वाले मकान में रहता हूँ।" कहकर उसने उँगली से अपने मकान की ओर इशारा किया और कमरे में रक्खी मेज के पास आकर उस पर किताबें और खिलौने का बक्स रख दिया। फिर बोला—"तुम लोगों के दिल बहलाने के लिए मैं कुछ चीजें भी साथ लाया हूँ। नीलू दीदी कह रही थीं कि शायद तुम लोगों को बहुत जल्दी आना पड़ा है और तुम्हें अपने खिलौने साथ लाने का वक्त नहीं मिला—इसीसे मैं अपने खिलौने का बक्स साथ लेता आया हूँ, जिससे लड़ाई का खेल खेल कर तुम थोड़ी देर अपना दिल बहला सकते हो।"

लड़के की ओर, जिसने अभी तक जबान नहीं खोली थी, उसकी बहन ने देखा। बादल की बात सुन कर लड़के के उदास और दुखी चेहरे पर पहली बार जरा-सी खुशी और उत्साह की झलक दीख पड़ी।

लड़की ने कहा—"फ्रांसिस, देखो ये लड़ाई के खिलौने लाए हैं। उसमें सिपाही होंगे और घोड़े होंगे और तलवारें होंगी। यह खेल जरूर तुमको पसंद आवेगा।"

फ्रांसिस, जो अब तक बादल से दूर था, नजदीक चला आया और खिलौने के बक्स की ओर देखता हुआ बोला—"क्या ये सिपाही बहादुर हैं ?"

"जरूर। तुम खुद ही देख लोगे।" बादल ने अभिमान के साथ कहा।

बादल ने बक्स का ढक्कन हटाया तो फ्रांसिस खुशी से उछल

पड़ा। और मेज पर झुककर ध्यान से उसके अन्दर की चीजों की ओर देखने लगा।

खिलौनों का यह बक्स बादल की सबसे बड़ी संपत्ति थी। उसके पिता ने उसके पिछले जन्म-दिवस के अवसर पर उसे उपहार देने के लिए खास तौर पर यह बक्स बनवाया था। इस खिलौने में सिर्फ हाथी-घोड़े ही हों, ऐसी बात नहीं थी। इसमें दो मोर्चे थे—एक हिंदुस्तानी मोर्चा और दूसरा दुश्मनों का मोर्चा। हिंदुस्तानी सिपाहियों का एक छोटा-सा किला था, जिस पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था। किले की दीवारों पर तोपें लगी हुई थीं। एक ओर सिपाहियों की कतार थी, जो बंदूक और किरचों से लैस थे; दूसरी ओर लड़ाई का बाजा बजानेवालों का दल था। सेना में घोड़े भी थे, जिन पर सवार होकर सिपाही लड़ते थे। दुश्मनों के मोर्चे के सिपाही झाड़ियों में छिपे हुए थे और पुराने ढंग के हथियारों से सजे हुए थे। खेल यों शुरू होता था कि दुश्मन झाड़ियों से निकल कर किले पर हमला करते थे और हिंदुस्तानियों से किला छीन लेना चाहते थे, लेकिन हिन्दुस्तानी सिपाही जान पर खेल कर अपने किले की रक्षा करते थे और बड़ी बहादुरी के साथ दुश्मनों से लड़ते हुए उनके ज्यादातर सिपाहियों को मार डालते थे और बाकी बचे हुओं को कैद कर लेते थे।

फ्रांसिस बड़े गौर से इन खिलौनों को देख रहा था। बादल इसी बीच दोनों मोर्चों के सिपाहियों को तरतीब से सजाने लगा, ताकि खेलने का ढंग वह उन बच्चों को समझा सके। खिलौनों को ठीक जगह पर सजाते हुए बादल ने कहा—"चाहो तो तुम भी मेरी मदद कर सकते हो। तुम दुश्मन बनना और हमारे किले पर हमला करने के लिए आना। मैं तुम्हारे कुछ सिपाहियों को कैद कर लूँगा और बाकी सबको मार डालूँगा।"

बादल की बात सुनकर फ्रांसिस का चेहरा मुरझा गया—वह

दुश्मन बनकर हिंदुस्तानियों से नहीं लड़ना चाहता था। उसने उदास-होकर कहा—"नहीं, मैं हिंदुस्तानियों की ओर से लड़ूँगा।"

बादल ने सोचा, उससे गलती हो गई। इन उदास बच्चों का जी बहलाने के लिए ही जब वह अपने खिलौने लाया है तो ऐसा कोई काम उसे न करना चाहिए, जिससे वे खुश होने के बदले और दुखी हो जायँ। इसके अलावा खिलौनों का मालिक वही है, लिहाजा खेल का जीतवाला हिस्सा खुद लेने की जिद उसके लिए उचित भी नहीं है। उसने फ्रांसिस को दिलासा देते हुए कहा—"अच्छी बात है, दुश्मन मैं ही बनूँगा।"

इसके बाद किले पर हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय झण्डा फहराने लगा और खेल जोर-शोर से चलने लगा।

फ्रांसिस ने अपनी बहन से कहा—"सिस, तुम खेल की निगरानी करती रहो और जब मैं चाहूँ तो मुझे मदद भी देना।"

सिस अपने भाई के पास आकर बैठ तो गई और खेल की ओर देखने भी लगी, लेकिन उसका दिल उसमें नहीं था और न उसे इसी बात की परवाह थी कि कौन पक्ष जीतता है और कौन हारता। यद्यपि वह बड़ी सावधानी से अपने भाई से अपनी यह उदासीनता छिपाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन बादल ने उसके मन का भाव ताड़ लिया। फिर भी उसने सोचा—'आखिर लड़की ही तो है! वह लड़ाई के मोर्चों की बात आखिर समझ भी क्या सकती है।'

लेकिन फ्रांसिस के लिए यही बात नहीं कही जा सकती थी। वह चाहता था कि उसकी बहन खेल को ध्यान से देखे और जब जरा देर के लिए भी वह इधर-उधर देखती तो वह उसके कपड़े खींचकर उसे खेल की ओर मुखातिब करता था, लेकिन दर-असल उसे उसकी मदद की जरूरत कभी नहीं पड़ी। वह बड़ी होशियारी से अपने किले की रक्षा कर रहा था और बादल के सिपाहियों में

से बहुतेरे अपनी जान से हाथ धोकर भी अब तक किले के पास नहीं फटकने पाए थे।

और थोड़ी देर में तो दोनों लड़के खेल में इस कदर मशगूल हो गये कि सिस कब वहाँ से उठकर फिर उसी खिड़की पर जा बैठी, जहाँ दिनभर बैठी रही थी, इसका दोनों में से किसी को पता भी नहीं चला। बीच-बीच में फ्रांसिस खुशी से हँस पड़ता था तो वह घूमकर उसकी ओर देख लेती थी और उसके पीले उदास चेहरे पर हँसी की एक हल्की रेखा चमक उठती थी।

फ्रांसिस थोड़े ही वक्त में बिलकुल बदल गया था। उसकी उदासी जाने कहाँ गुम हो गई थी और वह बड़े उत्साह के साथ खेल में जीतता जा रहा था। उसके इस कदर जीतने की एक वजह यह भी थी कि गो बादल दुश्मनों की ओर था, फिर भी उसका दिल गवाही न देता था कि वह हिन्दुस्तान के किले पर जोरों का हमला करे या हिन्दुस्तानी सिपाहियों को जान से मार डाले, और इसीलिए वह पूरे जोश के साथ खेल नहीं पा रहा था। फ्रांसिस के सिपाहियों ने दुश्मनों के बहुत से सिपाहियों को मार डाला था और बाकी बचे हुओं का वे पीछा कर रहे थे। इसी वक्त फ्रांसिस ने सिर घुमाकर देखा कि सिस उसकी जीत का यह गौरव-पूर्ण दृश्य देख रही है या नहीं। लेकिन सिस वहाँ नहीं थी। फ्रांसिस ने जब देखा कि वह फिर खिड़की पर जा बैठी है तो अचानक उसकी आँखों में आँसू भर आए और उसने एक ही झपट्टे में दोनों ओर के सिपाहियों और किले वगैरह को उलट-पुलट कर फेंक दिया।

सिस ने ज्यों ही यह देखा, वह अपने भाई के पास दौड़ आई और उसके कन्धों पर हाथ रखकर उसे चुमकारती हुई बोली—"क्या बात हुई फ्रांसिस? अभी तो तुम काफी खुश थे!"

"जब तुम दुखी रहोगी तो मैं कैसे खुश रह सकता हूँ?"

फ्रांसिस ने सिसकते हुए जवाब दिया—"सिस, तुम बड़ी निर्दयी हो। अगर तुम खुश रहती तो मैं भी काफी खुश रह सकता था. तुम बड़ी खुदगरज हो कि ऐसी हो रही हो।"

फ्रांसिस उसके पीछे-पीछे दौड़ा गया और उसकी गोद मे मुँह छिपाकर कहने लगा—"मेरा यह मतलब नहीं था सिस! लेकिन क्या तुम अब कभी पहले की तरह खुश नहीं होओगी? कभी नहीं?......"

जरा देर के लिए सिस के होंठ काँपे, लेकिन जब वह बोली तो उसकी आवाज धीमी और स्थिर थी—"जरूर होऊँगी फ्रांसिस! लेकिन अभी नहीं। उसमें वक्त लगेगा। धीरे-धीरे हम-लोग फिर पहले ही की तरह खुश रह सकेंगे।"

लेकिन जब वह बोल रही थी, उसका चेहरा और भी सफेद पड़ गया था और उसकी आँखों में पहले से भी ज्यादा उदासी घनी हो आई थी।

बादल स्तब्ध होकर सिस और फ्रांसिस को देखता रहा। उसके मुँह से बोल न निकला। फ्रांसिस इस वक्त हिचकियाँ ले-लेकर रोने लगा था और बहन की गोद में सिर रखकर खिड़की पर लेट गया था।

फ्रांसिस ज्यों-ज्यों रोता जाता था, सिस का चेहरा त्यों-ही-त्यों सफेद होता जा रहा था। आखिर फ्रांसिस रोता-रोता सो गया। सिस ने जब देखा कि उसे नींद आ गई है तो इशारे से बादल को पास बुलाया ताकि वह धीरे-धीरे उससे बातें कर सके।

बादल के पास आने पर उसने कहा—"तुम्हारे आने से हम लोगों को बड़ी तसल्ली मिली; लेकिन अच्छा हो कि अब तुम घर जाओ। फ्रांसिस रात होने से पहले शायद नहीं जागेगा।"

बादल ने सिर हिला कर अपनी मंजूरी जताई। वह स्वभाव से ही बहुत बातूनी नहीं था और इस वक्त उसने जो दृश्य देखा

था, उससे तो उसकी बोलती और भी बन्द हो गई थी। वह मेज के पास जाकर खिलौने बक्स में सहेजने लगा।

लेकिन अभी आधे खिलौने भी बक्स में नहीं रखे गये थे कि वह ठिठका और फिर सिस के पास जाकर बोला—"क्या मैं इन खिलौनों को यहीं छोड़ जा सकता हूँ, ताकि जब फ्रांसिस की नींद खुले तो वह फिर इनसे अपना जी बहला सके?"

"तुम्हारी मेहरबानी है।" सिस ने कृतज्ञतापूर्वक कहा, क्योंकि वह जानती थी कि इन खिलौनों से, जागने पर, फ्रांसिस का दिल किस कदर बहल सकता है।

बादल को अपने खिलौने छोड़ जाने की बात कहने में अपने-आप से थोड़ा लड़ना पड़ा था, लेकिन जब उसने देखा कि उसकी बात से सिस कितनी खुश हुई है तो उसे लगा कि उसने यह बात न कही होती तो यह उसका स्वार्थीपना होता।

सिस ने कहा—"मैं खिलौने का खास तौर से खयाल रखूँगी, ताकि कुछ नुकसान न होने पावे और सचमुच जागने पर फ्रांसिस का जी इन खिलौनों से बहुत कुछ बहल सकेगा।"

बादल ने कहा—"अच्छा हो कि एक बात मैं तुम्हें पहले ही बतला दूँ।······वह सेनापति जो है न, वही मोटा-सा भारीभरकम सेनापति, वह जब पैदल चलता है तो कभी-कभी उसकी टाँग खिसक कर निकल जाया करती है, इसलिए यह बेहतर होगा कि वह हमेशा घोड़े पर रहे और लड़ाई के वक्त उसे किसी तोप या पेड़ के सहारे खड़ा कर दिया जाय। ऐसा होने पर वह ठीक रहेगा।"

सिस ने वादा किया कि वह इन बातों का खयाल रखेगी, और सेनापति की लँगड़ी टाँग की बात तो हरगिज न भूलेगी। इस वादे से बादल की दिलजमई हो गई और वह सिस को नमस्कार करके कमरे से बाहर निकल आया।

३

बादल जब अपने मकान की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा तब अचानक उसे याद आया, उससे एक बहुत बड़ी गलती हो गई है। एक तो वह बिना किसी से कुछ कहे-सुने, अकेला सिस वगैरह के यहाँ चला गया और फिर इतनी देर उनके पास रहने के बाद भी उनके पुकार के नामों के अलावा उनके बारे में और कुछ जान नहीं सका। अब गगन और नीलम उस पर गुस्सा होंगे और नीलम तो तरह-तरह के सवालों से उसके नाकोंदम कर देगी।

लेकिन उसके अचरज का ठिकाना न रहा जब उसे पता चला कि सिस वगैरह के यहाँ जाकर उसने उनके बारे में जितनी जानकारी हासिल की है, उससे बहुत ज्यादा, करीब-करीब जानने लायक सभी बातें गगन और नीलम वगैरह को पहले ही मालूम हो चुकी हैं। कम-से-कम उसके वहाँ जाने की बाबत तो वे सब कुछ जानते हैं।

बादल ने ज्यो ही कमरे का दरवाजा खोला, चारों ओर से उस पर सवालों और झिड़कियों की बौछार होने लगी। गगन ने दौड़कर उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और उसे एक कुर्सी पर बैठा दिया। और तब......

"हाँ तो बादल जी, अब यह बतलाइए कि आपको अपनी मर्जी से, बिना किसी से कुछ कहे-सुने और पूछे-ताछे लोगों के यहाँ आने-जाने की आजादी कब से मिल गई ?" गगन ने कहा—"जी हाँ, हम लोग आपके बारे में सब कुछ जानते हैं।"

नीलम बोली—"क्या उस लड़की ने तुमसे इस बात का वादा किया कि वह सेनापति की लँगड़ी टॉग का खयाल रखेगी ?"

जरा देर के लिए तो बादल चक्कर में पड़ गया कि उसके बारे में इतनी सही-सही खबरें इन सबों को मिल कैसे गई, लेकिन तुरत ही उसे उस खिड़की का खयाल आया, जिससे वह खुद सारे दिन उन लड़कों की ओर देखता रहा था – जरूर गगन वगैरह ने यहीं से उसकी सारी हरकतें देखी होंगी।

मिनी बोली—"अच्छा बादल, अब तुम उन लोगों के बारे में सारी बात हम लोगों को बताओ। बूढ़ी दादी यहाँ आई थीं और बुआ से उनके बारे में बातें कर रही थीं, लेकिन देर तक ठहरने की उनको फुर्सत नहीं थी।"

"अच्छा !" बादल उनके सवालों का जवाब देने के बदले खुद ही सवाल करने लगा—"तो क्या उन्होंने तुम लोगों को यह भी बतलाया कि वे बच्चे इतने उदास क्यों हैं ? मैं जब उनके पास था, फ्रांसिस तो फिर उसी वक्त सुबक-सुबक कर रोने लगा था।"

नीलम ने पूछा—"तो इतनी देर उनके पास रहने पर भी तुम ये बातें नहीं जान सके ? हम लोग तो उनके पास गए भी नहीं और उनकी बाबत तकरीबन सभी बातें जान गये।"

बादल ने कहा—"मुझे भी बताओ।"

नीलम बोली—"उनका एक छोटा-सा भाई था, लगभग दो साल का, कई दिन हुए वह डूब गया है।"

गगन ने कहा—"कैसी भयंकर बात है !......"

"उनका मकान दामोदर नदी के बिलकुल किनारे पर है। पिछले सोमवार को वे तीनों नदी के किनारे खेल रहे थे। नदी में उस वक्त बाढ़ आई हुई थी। अचानक बच्चे का पैर फिसल गया और वह तेज धारा में बह गया। फिर उसका पता न चला।

उसको डूबे आज चौथा रोज है।"

बादल चुपचाप बैठा सुनता रहा। उसकी आँखों मे आँसू भर आए। थोड़ी देर बाद उसने कहा—"ओह, बेचारी सिस! इसी से वह मेरे खिलौने से खेल न सकी!!"

गगन ने पूछा—"तो क्या छोटा लड़का तुम्हारे साथ खेला था?"

बादल ने कहा—"वह वैसा छोटा तो नहीं है। वह मेरे जितना बड़ा है।"

दर-असल फ्रांसिस बादल से बड़ा था—उसकी उम्र आठ साल की थी और फ्रांसिस की ग्यारह। लेकिन बादल को यह बात पसंद नहीं थी कि वह किसी को अपने से बड़ा बतलावे।

उसने कहना जारी रखा—"हम लोग खासे मजे में खेल रहे थे कि अचानक फ्रांसिस ने देखा, सिस हम लोगों का खेलना नहीं देख रही है। वह खिड़की के पास चली गई थी और बेहद उदास हो गई थी। बस, फ्रांसिस ने खेल का तख्ता उलट दिया और सुबक-सुबक कर रोने लगा।"

नीलम ने कहा—"बूढ़ी दादी भी हम लोगों से यही कह रही थीं कि फ्रांसिस की ज्यादा उदासी सिस की वजह से ही है; नहीं तो वह अक्सर अपने भाई की याद भूल जाता है, हँसता-खेलता भी है, लेकिन फिर जब सिस को उदास देखता है तो उसकी याद ताजी हो जाती है और वह रोने लगता है। सिस की हालत तो यह है कि जब से वह यहाँ आई है, न मुँह में उसने एक दाना डाला है, न ही रात को पलभर के लिए सोई है।"

गगन ने कहा—"और उनकी माँ की हालत बहुत खराब है। फ्रांसिस का रोना सुनकर उन्हें बार-बार बेहोशी के दौर हो आते थे, इसी से डाक्टर ने कहा कि बच्चों को कुछ वक्त के लिए कहीं

दूसरी जगह भेज दिया जाय, नहीं तो उनकी माँ पागल हो जायँगी। कल रात सिस के पिता दोनों बच्चों को यहाँ पहुँचा गए हैं।"

नीलम ने कहा—"पिछले महीने पिता जी हम लोगों को राजरप्पा ले गये थे न, वहाँ से दो मील और आगे सिस वगैरह का मकान है। राजरप्पा का दृश्य कितना सुंदर था और उसी में बेचारा सिस का भाई डूब गया।"

बादल बोला—"अब जब कभी हम लोग फिर पिकनिक के लिए राजरप्पा जायँगे तो यह याद हमारी यात्रा का सारा मजा किरकिरा कर देगी।"

बादल ने जैसे सब के मन की बात कह दी। थोड़ी देर लड़के चुप रहे, फिर सोचने लगे कि अगले दिन उन सभी को सिस और फ्रांसिस से मिलने के लिए जाना चाहिए या नहीं।

लेकिन अगली सुबह बूढ़ी दादी ने उनकी मुश्किल आसान कर दी। वे सब लड़कों को न्योता देने आईं कि वे सिस और फ्रांसिस से मिलने के लिए चलें। उन्होंने कहा—"तुम लोगों के चलने से इतना तो होगा कि उन्हें साथ लेकर तुम लोग कहीं घूमने-टहलने जाओगे तो जरा देर उनका दिल उस खयाल की तरफ से हट सकेगा।"

गगन ने झटपट जवाब दिया—"जरूर दादी, हम सभी तुम्हारे साथ चलेंगे। आज तो दिन बड़ा साफ है। बुआ इजाजत दें तो हम लोग राजरप्पा पिकनिक के लिए चले जायँ—हाँ, हम लोग तुम्हारी घोड़ी को भी साथ ले जाना चाहेंगे।"

बुआ ने जरा असमंजस में पड़कर भी जाने की इजाजत दे दी। बूढ़ी दादी को भी घोड़ी देने में कोई एतराज न था, क्योंकि एक तो बच्चे उस पर खाने-पीने का सामान लाद कर ले जा सकते थे, दूसरे थक जाने पर बादल या फ्रांसिस भी बारी-बारी

से उस पर सवारी कर सकते थे।

बूढ़ी दादी ने घर जाकर बहुत से फल भिजवा दिये और कहला भेजा कि सिस और फ्रांसिस ठीक दस बजे तैयार रहेंगे।

गगन और नीलम ने रसोई घर में जाकर और 'यह बनाओ' 'वह बनाओ' कह-कहकर बुआ को परेशान कर डाला। बहरहाल वक्त पर सारी चीजें तैयार हो गईं और बँध-छन गईं। दस बजने में जरा देर थी और बच्चे दालान में तैयार बैठे घड़ी देख रहे थे। एकाएक नीलम ने कहा—"गगन, मान लो कि हमारी—इनकी पटरी नहीं बैठी तब तो हमारा भी सारा दिन चला जायगा और पिकनिक का सब मजा किरकिरा हो जायगा।"

गगन ने गंभीरता से कहा—"इसका कोई सवाल नहीं है। हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हमारी वजह से उनका दिल बहल सके और थोड़ी देर के लिए भी वे अपना दुःख भूल सकें।"

नीलम अपनी स्वार्थपरता के लिए शरमिंदा होकर बोली—"बेशक, तुम ठीक कहते हो गगन! शायद वे इस यात्रा के लिए उत्सुक भी हों।"

लेकिन नीलम का यह खयाल पूरी तरह से सही नहीं था। सिस चले तो फ्रांसिस चलने के लिए राजी था, लेकिन उसके बिना वह जाने की बात भी नहीं सुनना चाहता था। इधर सिस के मनमें घर छोड़कर बाहर जाने का कोई उत्साह नहीं था। यह सोचकर उसे घबराहट होती थी कि उसे दिनभर बहुत से अनजान लड़कों के बीच रहना पड़ेगा और जब कि उसके दिल में खुशी और उत्साह नहीं है, औरों की खातिर उसे खुश और हँसमुख बनना पड़ेगा। फिर भी जाना उसके लिए जरूरी था; क्योंकि उसके बिना फ्रांसिस जायगा नहीं और यह सही है कि उन लोगों के साथ हँस-खेलकर वह खुश हो सकेगा। इसलिए उसने जाना मंजूर कर लिया था और तैयारियों में लग गई थी।

ठीक दस बजे जब नीलम, गगन और मिनी बूढ़ी दादी ड
यहाँ पहुँचे तो सिस और फ्रांसिस तैयार खड़े थे। घोड़ी पर सार
सामान पहले ही लद चुका था। जरा देर बाद बादल भी आता
दीख पड़ा। उसकी पीठ पर कनवास का एक बैग था, दाहिने
हाथ में मछली पकड़ने की वंसी और बाएँ में गुलेल और थैली
भरी गोलियाँ। इतना-सा बोझ लिए वह हिलता-डोलता चला आ
रहा था। सब लड़के उसे देखकर हँसने लगे। गगन ने हँसते
हुए कहा—"गो राजरप्पा तक रास्ता लगभग ढालुवाँ है, फि
भी देख लेना, बादल वहाँ पहुँचने से पहले ही थक जायगा।
इतनी सारी चीजें तो हम लोग ले ही जा रहे थे, लेकिन इतने र
उसका जी नहीं भरा—वह अपने हथियार भी जरूर साथ
ले लेगा ?"

सिस ने धीमी आवाज में कहा—"क्या इस सामान को भ
घोड़ी पर नहीं लाद लिया जा सकता ?"

अब सब लड़के घर से चल पड़े थे। सिस और गगन आगे
आगे, तब नीलम, फ्रांसिस और मिनी। बादल अपना सामान
सहेज-सँभालकर सबके पीछे लड़खड़ाता जा रहा था।

गगन ने कहा—"अरे राम कहो ! अपनी चीजों के लिए वह
किसी का भरोसा नहीं करता—घोड़ी का तो भला क्या करेगा!
हम लोगों को तो बड़ा अचरज हुआ जब वह कल खिलौने क
बक्स तुम्हारे यहाँ छोड़ आया।"

सिस से कहा—"यह उनकी मेहरबानी थी और सचमुच
जागने के बाद फ्रांसिस बड़ी रात तक उनके साथ खेलता रहा
लेकिन मुझे अफसोस है कि सेनापति⋯"

सेनापति का नाम सुनते ही बादल आगे दौड़ आया और
घबराकर पूछने लगा—"क्यों, उसकी टाँग का क्या हाल है ?"

अब तक फ्रांसिस भी पास आ गया था। उसने कहा—

"से[illegible] की टाँग लड़[illegible]ड़ गई थी, लेकिन यह मेरी नहीं, सिस की [illegible]लती थी। सिस ने मुझे बताया कि तुम कह गए हो कि उसे तो[illegible] खड़ा कर देना चाहिए; इसी से मैंने उसे तोप के मोहड़े पर खड़ा कर दिया था, और लड़ाई में जब तोप चली तो उसकी टाँग साफ उड़कर कमरे के कोने में जा रही। फिर बूढ़ी दादी आईं तो उन्होंने तार लेकर उसकी टाँग दुरुस्त की।"

बेचारे सेनापति की दुर्दशा पर बादल को छोड़ सब लड़के खिलखिला कर हँस पड़े। जब हँसी का दौर खत्म हुआ तो बादल ने बतलाया कि तोप के सहारे खड़ा करने का यह मतलब नहीं था कि उसे बिलकुल तोप के मोहड़े पर खड़ा कर दिया जाय।

"यह सारी गलती सिस की थी।" फ्रांसिस ने दुबारा कहा—"थी न सिस ?"

लेकिन सिस के कुछ बोलने से पहले ही गगन ने कहा—"इससे कुछ होता-जाता नहीं कि गलती किसकी थी। क्यों बादल ?······अब तक उस बदकिस्मत सेनापति को अपनी टाँग के बार-बार उड़ जाने का खासा तजरबा हो चुका है—मैं समझता हूँ कि उसने जान-बूझकर अपनी टाँग उड़ जाने दी होगी, ताकि वह मजे से अस्पताल में लेटा रह कर दूर से लड़ाई का तमाशा देखे। शायद वह अन्दर से बुजदिल है।"

बादल ने गगन की इस बात का जोर से विरोध किया, बोला—"हर्गिज नहीं। उसकी टाँग लड़ाई में टूटी है और यही इस बात का सबूत है कि वह बुजदिल नहीं है।"

गगन हँस पड़ा। हँसते-हँसते उसने बड़े भाई के बड़प्पन के साथ कहा—"बादल बड़ा खुशदिल लड़का है। मेरा खयाल है, कल अचानक तुम्हारे यहाँ पहुँच कर उसने तुम लोगों को दिक

नहीं किया होगा।"

सिस की आँखों में फिर गहरी उदासी घिर आई थी। उसने कहा—"नहीं, नहीं।" लेकिन उसकी आवाज ऐसी थी, जैसे बादल के जाने से उसे न कोई खुशी हुई, न तकलीफ। वह चुपचाप गगन के साथ आगे बढ़ने लगी।

फ्रांसिस नीलम के साथ खुश था। अब अपरिचितों के बीच की उसकी झिझक दूर हो गई थी। वह खुल कर बातें कर रहा था और बीच-बीच में हँस भी पड़ता था। लेकिन गगन सिस को लेकर मुश्किल में पड़ गया था। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह किस तरह सिस का दिल बहला सकता है। लगभग दस-पन्द्रह मिनट तक वे दोनों चुपचाप चलते रहे, लेकिन अन्त में सिस ने ही गगन की मुश्किल आसान कर दी। अचानक उसने कहा—"मेरे साथ चलने में तुम्हारा जी ऊब रहा होगा। अच्छा हो कि तुम औरों के साथ हो लो।"

"नहीं, नहीं, ऐसी बात बिलकुल नहीं है।" गगन ने झटपट कह तो दिया, लेकिन यह बात ठीक-ठीक सच नहीं थी। वह चाहता था कि कम-से-कम उसका साथी चुप्पी तो नहीं ही साधे—"मुझे तुम्हारे लिए बड़ा अफसोस है, हम सबको तुम लोगों के लिए बड़ा अफसोस है और हम चाहते हैं कि किसी तरह तुम लोगों का दिल बहला सकें। क्या यह अच्छा नहीं होगा," उसने जरा हिचकिचाते हुए कहा, "कि हम लोग कुछ और बातें करें, जिससे तुम्हारे दिल से वह दुखद खयाल दूर हो जा सके?"

सिस ने धीमे से सिर हिला कर कहा—"नहीं भाई, जब इंसान के दिल में हर वक्त सिर्फ एक ही खयाल घूम रहा हो, तब दूसरी किसी बात मे उसका जी नहीं लग सकता।"

"शायद वह तुम्हारा भाई, तुमसे बहुत हिला हुआ था?" गगन के मुँह से जब अचानक यह बात निकल गई तो उसे

ख़याल आया कि जिस बात को वह बचाना चाहता था, अन-जानते में उसने सिस को उसी की याद दिला दी है।

सिस ने कहा—"वह तो मुझसे हिला था ही; लेकिन मैं तो उसे अपने प्राणों से ज्यादा प्यार करती थी, ओह गगन भाई, तुम नहीं जानते कि अब भी मुझे इस बात का विश्वास नहीं होता कि प्यारा सेसिल अब नहीं है। रात को सोये-सोये मुझे ऐसा जान पड़ता है, मानों वह किलकता हुआ दोनों बाँह फैलाये मेरी गोदी में दौड़ आया है। तब मेरी नींद खुल जाती है और ....."

बोलते-बोलते सिस का गला भर आया, लेकिन फिर भी उस प्यारे भाई की बातें करने में उसे एक तरह का सुख ही मिल रहा था, जिसकी याद में वह रात-दिन घुल रही थी। एक-एक करके वह सेसिल के बारे में तमाम बातें बतलाने लगी। उसने कहा—"गगन भाई, उसके जैसा प्यारा, भोला-भाला बच्चा शायद ही किसी ने देखा हो। उसके घुँघराले सुनहले बाल थे और बड़ी-बड़ी काली आँखें थीं। मेरा 'सिस' नाम उसी ने रक्खा था," कहते-कहते सिस की आवाज काँप उठी—"क्योंकि मेरा असल नाम लेने में उसे दिक्कत होती थी।"

इसी तरह सिस ने उसके बारे मे गगन से सारी बातें कहीं। गगन को अब मालूम हुआ कि वह अपने भाई को कितना ज्यादा चाहती थी और उसके लिए उसके मन में कितना अधिक दुःख है।

इसी वक्त नीलम ने पुकार कर कहा—"गगन जरा ठहरना भाई! फ्रांसिस थक गया है और घोड़ी पर चढ़ना चाहता है।"

सिस झटपट घूम कर खड़ी हो गयी—"फ्रांसिस, तुम बहुत थके तो नहीं जान पड़ते!"

"नहीं जी," घोड़ी पर चढ़ने की खुशी में दौड़कर आगे आते फ्रांसिस की ओर देखकर गगन ने कहा—"ज्यादा थका होता तो

वह इस तरह दौड़ता नहीं ।"

फ्रांसिस को जब घोड़ी पर चढ़ा दिया गया और सब लो आगे बढ़े तो गगन बोला—"राजरप्पा अब यहाँ से ज्यादा दू नहीं है। इस टेकरी के उस पार हम लोग पहुँचे कि बस अ गये।"

बादल चला तो सबसे पीछे था; लेकिन जब कि और लोग गप-शप करते धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, वह अपना बोझ सँभाले कदम बढ़ाता आगे निकल गया था। जब और लड़के टेकरी वे नीचे पहुँचे तो वह चोटी पर था। अचानक नीलम ने देखा, ब दौड़ा हुआ वापस नीचे की ओर आ रहा है। अपना झोला-झंड उसने ऊपर ही रख दिया है और चुटकियों में कोई चीज पकड़ बेतहाशा नीचे उतर रहा है।

नीलम ने कहा—"देखो तो, बादल कितना खुश होकर वापस भागा आ रहा है। जाने क्या पकड़ा है उसने !!"

गगन बोला—"उससे जरा-सा भी सब्र नहीं होता। मैं त हर्गिज़ उतनी ऊँचाई पर चढ़कर वापस न लौटता, वहीं रुक भले रहता।"

लेकिन बादल को इस बात की फिक्र न थी कि उसे दुबार टेकरी पर चढ़ने की मिहनत उठानी पड़ेगी। वह तो भागा आ रहा था और अपना हाथ ऊपर उठाये कुछ चिल्लाता भी जा रहा था। जब वह कुछ नजदीक आया तो सब ने सुना, वह कह रह था—"हवा की रानी ! हवा की रानी ! देखो तो यह कैसी खूब-सूरत है !!"

नीलम ने पुकारकर कहा—"बादू, ऐसे न दौड़ो, नहीं तो पैर फिसल जायँगे।"

लेकिन यह चेतावनी जरा देर से मिली बादल को। नीलम बोल ही रही थी कि अचानक एक पत्थर में ठेस लगने की वजह

से बादल गिर पड़ा और लुढ़कता हुआ जमीन पर आ रहा। खैरियत थी कि वह ज्यादा ऊँचाई से नहीं गिरा था और बारिश की वजह से जमीन भी नम थी, इससे चोट तो ज्यादा नहीं आयी; लेकिन उसने इतनी मिहनत से जिस तितली को पकड़ रखा था, वह मौका पाकर उड़ भागी। गिरने से ज्यादा तकलीफ बादल को इसी बात से हुई।

नीलम ने कहा—"अच्छा हुआ, बेचारी तितली छुटकारा पा गयी।"

गगन ने पूछा—"बादू भाई, और भी तीतलियाँ तुमने पकड़ी हैं क्या ?"

बादल ने मुँह बना कर कहा —"नहीं, अब मैं फूल चूनने जाता हूँ।"

नीलम ने हँस कर कहा—"बहादुर हो तुम बादल ! कुछ-न-कुछ तुम्हें करते जरूर रहना चाहिये।"

गगन ने बादल को चिढ़ाने की गरज से कहा—"मेरा खयाल था कि बादल अपने सेनापति की तरह ही अपनी टाँगों को भी लँगड़ी समझता है; लेकिन आज चलने में इसने सबको शिकस्त दे दी। क्यों बादू, तुम थके तो नहीं हो ?"

बादल ने घोड़ी पर लदी भोजन की सामग्रियों की ओर देखते हुए कहा—"नहीं, थका तो बिलकुल नहीं हूँ, लेकिन भूख मुझे जरूर लग आयी है।"

गगन ने कहा—"बस, तो अब देर क्या है ? टेकरी के उस पार तो राजरप्पा है। वहाँ पहुँचने के बाद जमकर हाथ साफ करना तुम !!"

राजरप्पा हजारीबाग जिले के सबसे रमणीक और सुंदर स्थल में से एक है। यहाँ दो नदियों का संगम है। इनमें से दामोद नदी, बरसात के अलावा, अपनी पथरीली चट्टानों की सेज पर, घन गहराइयों में सोया करती है, क्योंकि इसके प्रवाह का ज्यादात हिस्सा सघन-निर्जन वनों के बीच से प्रवाहित होता है। औ इसके ऊबड़-खाबड़ किनारों की निर्जनता बहुत ही आनन्ददायक प्रती होती है। दो नदियों के इस संगम पर छिन्नमस्ता देवी का ए प्राचीन मन्दिर भी है। जनवरी के महीने में हर साल यहाँ बहु बड़ा मेला लगता है। दूर-दूर के यात्री उसमें शरीक होते हैं।

नदियों के संगम के अलावा यहाँ के पहाड़ों और जंगलों क शोभा भी अनिर्वचनीय है। दूर-दूर तक फैले हुए जंगल, ऊँच नीची जमीन और छोटे-बड़े पहाड़ों ने इस स्थान को स्वर्गी सुन्दरता से आभूषित किया है। पहाड़ी नदियों की यह विशेषत होती है कि पानी बरसने पर उनमें एकाएक बाढ़ आ जाती। और फिर तुरत ही पानी उतर भी जाता है। छिन्नमस्ता व मन्दिर के सामने, नदी के अन्दर, बड़ी-बड़ी चट्टानें उभरी हुई हैं जिनसे खेलता और जिन पर उछलता हुआ बरसाती पानी बड़ भला मालूम पड़ता है। प्रकृति की यह शान्त-एकान्त गोद सैला नियों के लिए विशेष आकर्षण रखती है। राजरप्पा के आस-पास कोसों ऐसी सुन्दर जगह नहीं है।

छिन्नमस्ता के मन्दिर के पास पहुँचकर बच्चों ने नदी औ जंगल का सुन्दर दृश्य देखा। पिछले दिन की गहरी बारिश क पानी बहुत-कुछ उतर गया था और नदी लगभग शान्त-सी थी

सिर्फ चट्टानों से टकरा-टकराकर पानी उछल रहा था और फेन उगल रहा था। उछलते पानी के छींटे हजारों मोतियों की तरह बिखर रहे थे। नीलम ने कहा—"खैरियत है, नदी आज शान्त है।"

गगन बोला—"शान्त जरूर है, लेकिन आसमान भरा हुआ है और किसी वक्त भी पानी बरस सकता है। हो सकता है कि बिजली भी गिरे। आसमान की यह घनी चुप्पी कुछ मतलब रखा करती है।"

बिजली गिरने की बात ने फ्रांसिस को आतंकित कर दिया। उसने जरा डरी हुई आवाज में कहा—"अच्छा हो कि हम लोग घर लौट चलें। बिजली की कड़क मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है।"

गगन ने उसे दिलासा देते हुए कहा—"नहीं जी, डरने की कोई बात नहीं है। कुछ जरूरी थोड़े है कि बिजली गिरे ही, और गिरे तो यहीं गिरे!—इसके सिवा अगर कुछ होगा भी तो अभी नहीं—तब तक हम घूम-फिरकर लौट भी चलेंगे।"

काफी छान-बीन के बाद उन लोगों ने नदी के किनारे, एक चौड़ी चट्टान पर आसन जमाया। दरी बिछा दी गयी और सब लोग उस पर बैठ गये। सिर्फ बादल नदी के अन्दर की एक चट्टान पर बैठ कर पानी उछालता रहा। पानी-बूँदी की आशंका और मौसम की खराबी ने किसी की भूख कम नहीं की थी। यहाँ तक कि सिस का जी भी इस वक्त बदला हुआ दीख रहा था। सिस ने कहा—"नीलू दीदी, खाना तुम परसो, हम-लोग छुये तो उसमें छूत लग जायगी।"

नीलम ने कहा—"हम लोग छूत नहीं मानते। बाबूजी कहते हैं, जो इन्सान दूसरे से इतनी नफरत करता है कि उसका छुआ खाना-पीना नहीं खा-पी सकता, वह मनुष्यता और ईश्वर का अपमान करता है। हम लोग तो सबका छुआ खाते हैं।"

गगन ने कहा—"नीलू, तुम्हें याद है न, पिछली बार ज हम लोग यहाँ आये थे तो हमें इतनी भूख लग आयी थी कि स खाना एक ही दफा में चट कर गये थे, नतीजा यह हुआ f लौटते वक्त भूख से हमारे पैर नहीं उठते थे। इस बार ऐसी गल न करना।"

नीलम हँसती हुई बोली—"इस बार हम तीन वक्त का खा साथ लाये हैं। खाओ न, कितना खाओगे!"

घोड़ी की दोनों तरफ लटकती हुई गठरियों से टिफिन-कै यर, कटोरदान, तश्तरियाँ, फल, मेवे और मिठाइयाँ उतारी गयी नीलम और सिस तश्तरियों में खाना सजाने लगी, मिनी ने फ तराशने शुरू किये। गगन ने कहा—"लो, पीने का पानी ला तो हम भूल ही गये! नदी का पानी इतना गँदला है कि पि नहीं जा सकता। अब क्या होगा?"

नीलम ने कहा—"मन्दिर के उस बाजू एक बनिये की छोट सी दूकान है न, वहाँ से लेमन की बोतलें मँगवा लो।"

गगन ने जेब से एक अठन्नी निकालते हुए कहा—"भा लेमन कौन लावेगा?"

बादल अपनी चट्टान पर से उचक कर बोला—"मैं अ लिये आता हूँ।"

गगन ने पूछा—"छः बोतलें तो काफी होंगी न नीलू?"

बादल तब तक पास आ गया था। उसने कहा—"छः आद हैं, छः बोतलें हमारे लिए प्रचुरों हैं।"

नीलम जानती थी, गगन को अगर कोई कठिन शब्द मि गया तो बातचीत के बीच वह उसका गलत-सही प्रयोग जरू करेगा। 'प्रचुरों' के इस्तेमाल पर वह हँस पड़ी। उसने कहा - " 'प्रचुरों' नहीं रे, 'प्रचुर'। जिन मुश्किल शब्दों को तुम ठीक ठीक जानते नहीं, उनका इस्तेमाल क्यों करते हो?"

लेकिन बादल नीलम का संशोधन मानने को राजी नहीं हुआ। उसने कहा—"वाह रे, जब एक चीज होगी तो 'प्रचुर' होगा, जब बहुत-सी होंगी तो 'प्रचुरों' हो जायगा।"

गगन को भूख से ज्यादा प्यास लग रही थी। उसने हँसते हुए कहा—"अह्, छोड़ो भी यह झंझट, पहले तुम लेमन ले आओ, उसके बाद नीलम से बहस कर लेना। नीलम, सैर-सफर में व्याकरण सिखाने की तुम्हारी आदत बड़ी गड़बड़ है। क्यों फ्रांसिस ?"

फ्रांसिस डरा कि कहीं व्याकरण का उसका भी इम्तिहान न होने लगे। इसीसे उसने झटपट कहा—"हाँ, हाँ, यह तो ठीक ही है।"

इस बीच बादल लेमन लाने के लिए चल पड़ा था। जहाँ ये लोग बैठे थे, वहाँ से लगभग दो फर्लांग की दूरी पर बनिये की एक छोटी-सी दूकान थी। दूकान खासी अच्छी चलती थी, क्योंकि आम तौर पर सैर के लिए बराबर ही लोग राजरप्पा आते-जाते रहते हैं। दूकान की मालकिन बसन्ती जाति की कहारिन थी और पहले गगन वगैरह के यहाँ दाई का काम करती थी। बाद में उसने इस ओर के एक कहार से शादी कर ली और यहाँ आकर दूकान खोल बैठी। उसका आदमी गगन के पिता के फार्म में काम करता था। दोनों की आमदनी से उनकी गुजर मजे में चल जाया करती थी। गगन या उसके परिवार के लोग जब राजरप्पा आते तो बसंती की दूकान से जरूर कुछ-न-कुछ खरीदते; लेकिन बादल को तो उसकी दूकान से ज्यादा उसके अनगिनत बच्चों से दिलचस्पी थी। बसंती के कुल ग्यारह बच्चे थे, आठ साल की उम्र से लेकर डेढ़ महीने के दो जुड़वों तक। बड़े दो बच्चे भी जुड़वे ही थे। बादल ने सब को देखा था, सिर्फ डेढ़ महीनों के इन दो जुड़वों की पैदाइश की बात उसने सुनी थी, उन्हें देखा नहीं था। लेमन

लाने के बहाने उसे वह मौका भी मिल गया, इसीसे झटपट उस
लेमन लाने की जिम्मेदारी ले ली थी।

बादल जब बसंती के झोपड़े के पास पहुँचा तो उसके नव
बच्चे बाहर मैदान में खेल रहे थे। बादल को झोपड़ी की ओ
आता देखकर सब उसके आगे-पीछे हो लिये और इस तर
उन्होंने उसका रास्ता रोक लिया कि उसके लिए अन्दर जान
मुश्किल हो गया। लेकिन बसंती ने अन्दर से ही उसे देख लिया
वह कमरे के अन्दर एक लकड़ी के बकस पर बैठी पालने पर अप
छोटे बच्चों को झुला रही थी। उसने चिल्लाकर कहा—"अरे
तुम सब यहाँ क्या करने को आ मरे हो ? भागो, बाहर जाक
खेलो तुम लोग, नहीं तो अभी बच्चे जाग जायँगे।...ओ हो
बादल बाबू हैं क्या ? आइये, आइये, कैसे इधर आना हुआ ?"

माँ की फटकार सुनकर सब बच्चे एक ओर हो गये। उन
से कुछ तो बाहर चले गये, बाकी एक ओर दुबककर खड़े ह
गये। बादल को अन्दर जाने का रास्ता मिल गया। उसने कहा—
"मैं लेमन की छः बोतलें लेने आया हूँ। हम सब पिकनिकके लि
आये हैं। और लोग नदी-किनारे बैठे हैं।"

बसंती ने कहा—"बड़ा अच्छा है, बड़ा अच्छा है, इसी तर
कभी-कभी तुम लोगों को देख लेती हूँ। मेरा तो जी हर वक्त लग
रहता है, लेकिन इन बच्चों से और दूकानदारी से फुरसत ह
नहीं मिलती।" कह कर उसने एक लड़के को बगल वाले कम
से लेमन की बोतलें लाने के लिए भेज दिया। इसी बीच पाल
का एक बच्चा कुड़मुड़ाने लगा। बसंती झटपट पालने के पास
जाकर रस्सी खींच उसे झुलाने लगी।

बादल ने कहा—"दाई, तुम्हारे तो इतने बच्चे हो गये हैं कि
मुझे अचरज लगता है, कैसे तुम इन सबों को याद रख पाती
हो।"

बादल की बात सुनकर वसंती हँसने लगी। तभी बगलवाले कमरे से लेमन की बहुत-सी बोतलों के गिरने की जोरों की आवाज आयी, जिससे एक बच्चा चौंक कर जाग गया और रोने लगा। बसंती कहने लगी—"हाय, हाय, देखो तो, शैतान ने आखिर बच्चे को जगा ही दिया न। बादल बाबू, जरा तुम जा कर देखो तो कि क्या किया उसने। मै यहाँ से हटूँगी तो दोनों बच्चे रो-रोकर आसमान सिर पर उठा लेंगे।"

बादल ने जाकर देखा कि 'शैतान' ने कुछ खास नुकसान नहीं होने दिया है। लेमन की सभी बोतलें जमीन पर गिर जरूर गई थीं; टूटी एक भी नहीं थी। लेकिन इस बीच दोनों बच्चों ने जाग कर इस कदर शोर मचाना शुरू कर दिया था कि जब बादल फिर इस कमरे में आया तो बच्चों को देखकर वह चक्कर में पड़ गया। अगर उसने अपने कानों से सुना न होता तो वह विश्वास न कर सकता कि इतने जरा-से दो प्राणी मिलकर इतनी चिल्ल-पों मचा सकते हैं।

बादल ने कहा—"दाई, तुम्हारी हालत देखकर तो मुझे उस बुढ़िया की कहानी याद आती है, जो जूते में रहती थी और जिसके इतने बच्चे थे कि वह समझ ही न पाती थी कि वह उनका क्या करे!"

इसी बीच बाहर मैदान में एक लड़की चीख-चीख कर रोने लगी थी। बसंती ने कहा—"कभी-कभी तो सचमुच मैं भी नहीं समझ पाती कि इतने बच्चों का क्या करूँ।" फिर उसने अपने लड़के से कहा—"सोमरा, अरे देख तो सबली को क्या हो गया।"

बादल के दिमाग में एक ऐसी बात अचानक आयी कि मन-ही-मन वह फूल उठा। उसने कहा—"तो इनमें से कुछ तुम औरों को क्यों नहीं दे देतीं? मैं दो ऐसे बच्चों को जानता हूँ, जिनका

एक छोटा भाई अभी हाल ही मर गया है और किसी भी क
पर वे एक दूसरा भाई पाना पसन्द करेंगे।"

वसंती ने अनमनी-सी होकर कहा—"अच्छा, ऐसा है ? तो जरूर मैं अपने थोड़े से बच्चे उन लोगों को दे दूँगी।"

सोमरा के बाहर जाने पर सबली की रुलाई कम होने बजाय और ज्यादा बढ़ गयी थी। वसंती ने कहा—"बादल बा जरा तुम इस पालने को झुलाते तो रहो, तब तक मैं देख उ कि आखिर ये इतना शोर-गुल क्यों कर रहे हैं।"

वसंती बाहर गयी और बादल पालने की रस्सी खींचने ल लेकिन रस्सी उसने कुछ ऐसे ऊल-जलूल ढंग से खींची कि द बच्चे हक्के-बक्के होकर चुप लगा गये। उधर माँ को आते बाहर के बच्चों का झगड़ा भी बात-की-बात में निपट गय वसंती उन्हें डाँट-फटकार कर अन्दर आयी और यह देखकर उ राहत की साँस ली कि किसी तरह घर के अन्दर और बाहर शान्ति हो गयी है। उसने कहा—"बादल बाबू, तुमने तो ब होशियारी से दोनों बच्चों को चुप करा दिया। अब इनके ब के लिए खाना बनाने का वक्त मुझे मिल जायगा। सोमरा ले की बोतलें तुम्हारे साथ जाकर किनारे तक पहुँचा आवेगा।"

लेकिन बादल के दिमाग में लेमन की बोतलों से ज्य जरूरी एक बात चक्कर काट रही थी। उसने पूछा—"तुम अ बच्चों में से किसको देना चाह रही हो ? क्या तुम्हारा क लड़का लगभग दो साल की उम्र का है ?"

वसंती ने जरा देर बादल की ओर देखा, फिर हँस कर कहा- "मैंने समझा था, तुम यों ही कह रहे हो। यह सच है कि ये बच बड़े नटखट हैं, फिर भी अभी मैं किसी एक को भी नहीं सकूँगी। अगली बार जब फिर तुम आओगे तो हम लोग इस बारे में सोचेंगे।"

बादल ने कहा—"अच्छी बात है, लेकिन······"

बादल बसंती को बतला देना चाहता था कि यह बात उसने यों ही नहीं कही है, लेकिन अपनी बात वह पूरी भी न कर पाया था कि बसंती रसोई-घर में दौड़ गयी। चूल्हे पर चढ़ी दाल शायद जलने लगी थी। बादल का 'लेकिन' वह सुन नहीं पायी।

बादल जब सोमरा के साथ लदा-फँदा नदी-किनारे पहुँचा तो सबसे पहले गगन ने उसका स्वागत किया—"आखिर तुम आ ही गये बादल! हम लोगों ने तो समझा था, लेमन की छहो बोतलें शायद तुम खुद ही खत्म करके आओगे। आखिर तुम इत्ती देर वहाँ करते क्या रहे?"

बादल ने सिस और फ्रांसिस पर एक उड़ती-सी नजर डाली, फिर गगन से कहा—"मैं एक बहुत बड़ा काम कर रहा था। तुम लोग धीरे-धीरे उसे जान जाओगे। उतावली क्या है?"

और गगन को आज तो क्या, कभी भी बादल के ऐसे 'बहुत बड़े कामों' की बाबत जानने की कोई खास उतावली नहीं रहती थी, क्योंकि आखीर में अक्सर वे 'न कुछ' साबित होते थे। गगन ने कहा—"अच्छा, अच्छा, कोई बात नहीं।······अरे सोमरा, दो-एक अमरूद तो लेता जा।" कहकर गगन ने तीन-चार अमरूद और केले सोमरा को दे दिये। वह खुश होता दौड़कर अपने झोपड़े की ओर भाग गया।

बादल के आने-जाने में जितनी देर लगी थी, उसने सभी बच्चों की भूख और बढ़ा दी थी, इसीसे जब बादल अपने आसन पर आ जमा तो खाने की सारी चीजें जादू की तरह धड़ाधड़ गायब होने लगीं। जब इस वक्त का सारा खाना चुक गया और बच्चों के पेट भी भर गये तो गगन ने कहा—"चार बजे तक हम लोग यहाँ खेल-कूद सकते हैं, फिर शाम का नाश्ता करके यहाँ से चल देंगे।······मैं कहता हूँ कि आँख-मिचौनी खेली

जाय ”

मिनी न कहा “मैं तो नही खेलती, मेरे पैर मे ककड़ ग हैं।”

सिस ने कहा—“खेल में मैं भी शरीक नहीं हो सकूँगी। दोनों बल्कि तब तक सारे बर्तन धो-माँजकर साफ कर लेंगे।

गगन ने कहा—“ठीक है, ठीक है।” लेकिन मिनी यद्यपि मिट्टी-पानी से हाथ गँदला करना अच्छा नहीं लगता फिर भी वह सिस को बर्तन साफ करने के लिए अकेली कै छोड़ दे सकती थी ? इसलिए दोनों लड़कियाँ बर्तन लेकर न किनारे चली गयीं और बाकी चार जने खेलने की तैयारी क लगे। मौका पाकर बादल ने गगन को अपनी वह योजना सुना जिसके द्वारा वह सिस और फ्रांसिस को एक दूसरा भाई दे खुश करना चाहता था। गगन उसकी बात सुनकर ठहाका म कर हँसने लगा और ज्यों-ज्यों बादल अपनी बात की महत्ता स झाने की कोशिश करता, उसकी हँसी त्यों-ही-त्यों अधिकाधि बढ़ती जाती थी।

नीलम ने नजदीक आकर पूछा—“क्या बात है गगन तुम क्यों इस तरह हँस रहे हो ?”

लेकिन गगन ने नीलम से कुछ कहा नहीं। उसे डर था। कहीं सिस या फ्रांसिस उसकी बात सुन न लें। फिर भी वह तक बादल की बात पर हँसता रहा।

आँख-मिचौनी का खेल ज्यादा देर चल नहीं सका, क्यों दौड़-धूप में सबके पैरों में कंकड़ियाँ चुभ रही थीं। तब वे मि जुल कर नदी किनारे पत्थर के ढोकों से एक किला बनाने लग बड़ी मिहनत से किला बनकर जब तैयार हुआ, तभी अचान नदी में बाढ़ आने लगी और किला जैसे द्वीप के अन्दर f गया। उस वक्त सिस और मिनी बर्तन धो-माँज कर एक चट्

पर बैठी हुई थीं। उन्हें झपकियाँ आने लगी थीं। गगन ने उनकी ओर देखकर कहा—"देखो तो उन दोनों सुस्त लड़कियों को! उन्हें क्या पता कि हम लोगों ने कैसे मजे की चीज तैयार की है!!"

मिनी ने कहा—"हम लोगों को तुम्हारा 'मजे की चीज' तैयार करना देखने में ही ज्यादा आनन्द आता है। क्यों न सिस ?"

सिस ने कुछ ऐसे उदास और अनमने स्वर में 'बेशक' कहा कि गगन चौंककर उसकी ओर देखने लगा। उसके चेहरे पर फिर उसी पुरानी उदासी और दुःख के बादल घिर आये थे।

गगन ने कहा—"अब हम लोगों को नाश्ता-वाश्ता करके चल देना चाहिये, शायद अब जल्दी ही पानी पड़ने लगेगा और बिजलियाँ भी कड़केंगी। फ्रांसिस को बिजली की कड़क अच्छी नहीं लगती।"

इसके बाद सब बच्चे नाश्ता करने बैठ गये। झटपट नाश्ता किया गया, बर्तन बाँध-छाँदकर घोड़ी पर लाद दिया गया और लगभग आध घण्टे के अन्दर वे घर की ओर रवाना हो गये। जब वे लोग बसंती के घर के पास से गुजरे, बसंती के बच्चे उस वक्त भी मैदान में खेल रहे थे। गगन ने अकेले में, चिढ़ाते हुए-से स्वर में, बादल से पूछा - "इनमें से किसको तुमने सिस का भाई बनाने के लिए चुना है ?"

लेकिन बादल को गगन का यह मखौल उड़ाना अच्छा नहीं लगा। वह गम्भीरतापूर्वक चुप रह गया। उसने सोचा कि जब वह अपनी योजना पूरी करके दिखा देगा तब गगन को इस मजाक के लिए शर्मिन्दा होना पड़ेगा।

सब बच्चे जब उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, जहाँ से नीचे उतरते ही उनका गाँव पड़ता था तो उन्होंने एक बार पीछे की

ओर देखा। उन्होंने पाया कि नदी में अचानक बाढ़ आ गयी और काली-अँधेरी घटाएँ खूब सघन होकर घिर आयी हैं। दू पर, पहाड़ों की कतार के उस पार, शायद बारिश भी होने लग थी, क्योंकि आसमान कुहासे की तरह धुंध से भर गया था औ तेज हवा चलने लगी थी। पहाड़ की चढ़ाई मे, थक जाने व वजह से, फ्रांसिस और सिस ने घोड़ी पर सवारी की थी औ बाकी लड़के तेजी से आगे बढ़ते आये थे। सिस इस वक्त घोड़ी की पीठ पर थी। अचानक तेज हवा ने आँधी का रूप धार किया, पेड़-पौधे झुक-झुककर झूमने लगे और आसमान में ब की तरह बिजली गड़गड़ा उठी। बिजली की कड़क से अचान घोड़ी को जाने क्या सूझी कि वह उछलकर लौट पड़ी और स पट राजरप्पा की तरफ वापस भाग चली।

गगन ने बाकी बच्चों से कहा कि तुम लोग झटपट नीचे उत कर घर जाओ, मैं घोड़ी को पकड़कर लिये आता हूँ। जितन जल्दी हो सके, तुम लोग घर पहुँच जाओ, क्योंकि बारिश अ आने ही वाली है और देर करने से तुम सब के सब भी जाओगे।

अपनी बात खत्म करते-न-करते वह घोड़ी के पीछे दौ चला। नीलम ने सोचा कि गगन का इंतजार करने से को फायदा नहीं है, इसलिए एक हाथ से फ्रांसिस का और दूसरे मिनी का हाथ पकड़कर वह तेजी से नीचे उतरने लगी। थोड़ देर में वे गाँव में जा पहुँचे। फ्रांसिस को बूढ़ी दादी के घ पहुँचाकर वे अपने घर की ओर भागे और ज्यों ही दरवाजे प पहुँचे, पहले दो-चार बड़ी बूँद पड़ीं और उसके बाद तो झमाझम बारिश होने लगी।

इधर गगन घोड़ी के पीछे बेतहाशा भागा जा रहा था आखिर, लगभग एक मील की दौड़ लगाकर घोड़ी अपने आ

रुक गयी। सिस ने इतनी दूर तक कैसे अपने को घोड़ी की पीठ पर सँभाले रखा, वह यह खुद भी नहीं समझ पायी। उसे घुड़-सवारी का अभ्यास नहीं के बराबर था और इस तरह बदहवास भागनेवाली घोड़ी से तो इसके पहले कभी उसका साबका न पड़ा था; फिर भी किसी तरह वह घोड़ी की पीठ पर टिकी रही और जब गगन ने उसके पास पहुँचकर घोड़ी की रास पकड़ी तो उसे यह देखकर खुशी हुई कि सिस बिलकुल खैरियत से है।

गगन ने पूछा—"तुम क्या बहुत घबरा गयी थीं ?"

"नहीं, नहीं, घबराने की क्या बात थी, लेकिन मुझे इस बात का डर जरूर है कि तुम भीग जाओगे।..." सिस ने कहा।

गगन हँसकर बोला—"भीग जाऊँगा ? अरे, मैं तो शराबोर हो रहा हूँ और तुम्हारी भी यही हालत है।"

सिस को अपने इस अनमनेपन के लिए शर्मिन्दा होना पड़ा, क्योंकि अब तक बारिश जोरों से पड़ने लगी थी और गगन और सिस दोनों ही पानी से लथपथ हो रहे थे। गगन तो खैर, अपने को सँभाले हुए था, लेकिन सिस ठण्ढक से थर-थर काँप रही थी।

बारिश के साथ-ही-साथ आसमान में बिजलियाँ चमकने लगी थीं और बादल गरजने लगे थे। चारों ओर प्रलय का-सा दृश्य दीख पड़ता था। रास्ते में पानी भर गया था और फिसलन हो गयी थी; फिर भी गगन घोड़ी की रास पकड़ कर खींचता हुआ भरसक तेजी के साथ घर की ओर चल पड़ा।

फ्रांसिस के घर पहुँचने के लगभग आध घण्टे बाद सिस और गगन बूढ़ी दादी के घर पहुँचे। सिस का बदन ठण्ढ से इस कदर अकड़ गया था कि गगन को सहारा देकर उसे घोड़ी से उतारना पड़ा। उतरने पर भी उसका सारा बदन इस तरह काँप रहा था कि जमीन पर खड़ा होना उसके लिए मुश्किल था।

बूढ़ी दादी को इस खतरे का पहले से ही अन्देशा था, इसलिए

उन्होंने आग जला रखी थी और सिस के गर्म कपड़े निकाल लिये थे। सिस को अन्दर ले जाकर उन्होंने उसे सूखे और गर्म कपड़े पहनाये और पलँग पर लिटाकर उसका बदन सेंकने लगीं।

गगन ने घोड़ी को अस्तबल में बाँधकर अपने घर की राह ली।

६

शाम से जो बारिश और आँधी-तूफान शुरू हुआ, वह सारी रात बना रहा। आँधी की हरहराहट, बारिश की झमझमाहट और बादलों की गरज-तड़प से उस रात शायद ही किसी को जी-भर नींद मयस्सर हुई हो। बादल का जी अन्दर से चाहे जितना धक्-धक् करता रहा हो, अपने मन के डर को प्रकट करना वह अपनी तौहीन समझता था; लेकिन मिनी ने साफ-साफ कह दिया कि आज वह अपनी पलॅंग पर अकेली न सो सकेगी, नीलम के साथ सोयेगी। नीलम ने इन्कार तो नहीं किया, और रात का कुछ हिस्सा उसने किसी कदर धीरज के साथ काट भी लिया, लेकिन आधी रात बीतते-न-बीतते उसका धीरज छूट गया। पलॅंगें छोटी थीं और एक साथ दो आदमियों के सोने का मतलब यह था कि किसी एक की आधी देह पलँग से बाहर लटकी रहे। नीलम ने जब देखा कि मिनी पलॅंग के बीचोबीच गहरी नींद में सोई हुई है तो वह चुपके से उठकर उसकी खाली पलँग पर जा सोयी और रात का बाकी हिस्सा सोकर बिता सकी। लेकिन सुबह उठकर जब मिनी ने उसकी यह चालाकी जानी तो बड़ा ऊधम मचाया।

गगन और बादल के कमरे की खिड़कियाँ बाहर की ओर खुलती थीं। दिनभर की थकावट की वजह से दोनों भाई इतमीनान से सोये हुए थे। अचानक आधी रात के वक्त बाहर कुछ आवाज सुनकर गगन की नींद खुल गयी। एहतियातन वह खुली खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया। बाहर घुप्प अँधेरा था। रात झायॅं-झायँ कर रही थी। आँधी-पानी की निरन्तर आवाज के सिवा और कुछ सुन न पड़ता था। अचानक बिजली चमकी और पलभर के

लिए चारों ओर उजाला छा गया। गगन ने उसी उजाले में देखा कि खिड़की के नीचे बूढ़ी दादी खड़ी हैं। बूढ़ी दादी ने भी गगन को देख लिया और चिल्लाकर कुछ कहा, लेकिन गगन सुन न सका। बार-बार पूछने-कहने पर वह सिर्फ इतना जान पाया कि वे चाहती हैं कि कोई जाकर डॉक्टर को बुला लावे।

गगन ने चिल्लाकर पूछा—"क्यों दादी, क्या बात है?"

"सिस अकबका रही है।"

उनका जवाब ठीक-ठीक सुन न पाने के कारण गगन ने घबरा-कर पूछा—"क्या कहा? वह क्या इस अंधड़ में बाहर निकल गयी है?"

"नहीं, नहीं, उसके होश-हवास दुरुस्त नहीं हैं। बुखार बहुत तेज हो गया है। मैं उसे इस हालत में छोड़कर डॉक्टर के यहाँ कैसे जाऊँ?······भैया, तुम जरा किसी नौकर को जगाकर डॉक्टर के यहाँ भेज दोगे?

दादी की बातों में से इतनी बातें गगन किसी तरह सुन सका और वह कुछ जवाब देने ही वाला था कि ऐसे जोर की बिजली चमकी कि उसे खिड़की से अन्दर मुँह छिपा लेना पड़ा, फिर जो उसने दादी को पुकारा तो पाया कि वे वापस लौट गयी हैं।

गगन ने सोचा कि वह नौकरों को जगाने में बेकार वक्त बरबाद नहीं करेगा। इस आँधी-पानी में पहले तो वे जल्दी जागेंगे नहीं और जागने पर भी, हो सकता है, डॉक्टर के यहाँ तक जाने में आनाकानी करें। इतनी देर में जाने क्या-से-क्या हो जाय। इसलिए उसने खुद ही डॉक्टर के यहाँ जाने का निश्चय किया। झटपट उसने कपड़े पहने, बरसाती और छाता लिया, रबर का जूता पहना और पाँव की आहट बचाता नीचे उतर गया।

डॉक्टर का घर गाँव से बाहर जरा दूर था। गगन जल्दी-जल्दी पाँव बढ़ाता चलने लगा; लेकिन तेज चलना आसान नहीं

ा। सड़क ने छोटी-मोटी नदी का रूप धारण कर रखा था। फिसलन भी काफी थी। बीच-बीच में चमक उठनेवाली बिजली की रोशनी में राह देखता गगन भरसक तेजी से डॉक्टर के घर की ओर बढ़ने लगा।

डॉक्टर के यहाँ पहुँचकर गगन ने ज्योंही आवाज लगायी कि डॉक्टर ने खिड़की खोलकर पूछा—"कौन है?" जैसे वे किसी की इन्तजार में ही बैठे हों।

गगन ने कहा—"मैं हूँ डॉक्टर साहब, गगन। बूढ़ी दादी के यहाँ एक लड़की आयी हुई है, उसकी तबीयत बहुत खराब है। दादी ने कहा है कि जरा आप इसी वक्त चलकर उसको देख लें।"

डाक्टर ने कहा "अच्छा, अच्छा।" और खट् से खिड़की बन्द कर ली। दस मिनट बाद सदर दरवाजा खुला और पहले एक छाता निकला, फिर दवाइयों का चमड़ेवाला बैग और उसके बाद खुद डाक्टर साहब। डाक्टर ने जब गगन को बाहर खड़े-का-खड़ा देखा तो घबराकर बोले—"अरे, तुम अभी तक यहीं खड़े हो? मैंने समझा था, तुम चले गये होओगे और तुम्हें जरूर चला जाना चाहिये था। ऐसे आँधी-पानी में·······"

गगन ने बात काटकर कहा—"आँधी-पानी से मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नहीं डॉक्टर साहब! आप चलिये तो।"

डॉक्टर ने कहा—"नहीं, नहीं, ऐसा न समझना चाहिये। खैर, चलो चलें। और हाँ, वह लड़की है कौन? क्या हुआ है उसे?"

गगन बोला—"उसके बारे में ज्यादा तो कुछ मैं भी नहीं जानता; लेकिन उसका पुकार का नाम सिस है और उसका सबसे छोटा भाई कई रोज हुआ दामोदर में डूबकर मर गया है। उसकी माँ की हालत बहुत खराब थी, इसीलिए वह अपने छोटे भाई के साथ यहाँ भेज दी गयी है।"

"ओ, ठीक है, ठीक है। मैं ही तो उनका इलाज कर रहा हूँ। दोनों बच्चों को मैंने ही कहीं दूसरी जगह भेज देने की सलाह दी थी। तो वे यहाँ आये हैं ? अच्छा, तो सिस को क्या हुआ है भला ?"

"उसके होश-हवास दुरुस्त नहीं हैं। बुखार बहुत तेज हो आया है।" गगन ने बूढ़ी दादी से सुनी हुई बात ज्यों-की-त्यों दुहरा दी और इसी सिलसिले में राजरप्पा के पिकनिक और वहाँ से लौटते वक्त सिस के भीग जाने का भी हाल कह सुनाया।

गगन जब अपने घर के पास पहुँचा तो डॉक्टर से उसे विदा लेनी पड़ी। चाहता तो वह यह था कि डॉक्टर के साथ खुद भी दादी के घर जाकर देखे कि सिस का क्या हाल है, लेकिन डॉक्टर ने उसे किसी तरह इस बात की इजाजत न दी, बल्कि कहा कि जितनी जल्दी हो सके, वह घर जाकर और गर्म कपड़े पहनकर सो जाय।

गगन ने डॉक्टर की बात मान तो ली, लेकिन मन-ही-मन बोला—"जैसे कि अब फिर मुझे रात में नींद भी आ सकेगी !"

मगर हुआ यह कि पलँग पर लेटने के चंद मिनटों के बाद ही वह खर्राटे लेने लगा और ऐसी गहरी नींद सोया कि सुबह नाश्ते के वक्त से पहले उसकी आँखें न खुल सकीं। जब उसकी नजर दीवार पर लगी घड़ी पर पड़ी तो उसने दाँतों-तले जीभ दबायी, क्यों कि इतनी देर तक सोने की उसकी कभी की आदत न थी। वह चाहता था कि जल्दी-से-जल्दी फारिग होकर अपने भाई-बहनों के पास पहुँचकर उन्हें रात का किस्सा सुना सके, इसलिए भरसक जल्दी-जल्दी नहा-धोकर वह भोजनशाला की ओर चला, जहाँ बाकी लड़के नाश्ते पर बैठे उसका इन्तजार कर रहे थे।

आज की सुबह बड़ी सुहावनी थी। कल के आँधी-पानी के

ाद आसमान धुलकर स्वच्छ हो गया था और चमकीला सूरज आसमान पर रौशन हो रहा था। रेतीली जमीन भी धुलकर साफ ो गयी थी और सूरज की किरणों से चमक रही थी। पेड़-पौधे भभी तक गीले थे और रास्ते के किनारे-किनारे कहीं-कहीं पानी भब तक बह रहा था। छोटे-बड़े गढ्ढों में पानी लबालब भरा हुआ था। जमीन से एक सोंधी सुगंध उठ रही थी।

गगन ने ज्यों ही भोजनशाला में कदम रखा, नीलम पुकार उठी—"अच्छा, आखिर तुम आ ही गये ? हम लोगों ने तो समझ लेया था कि अब सारा दिन तुम सोते ही रह जाओगे और ओः, हम लोग किस कदर उतावले हो रहे थे कि रात का सारा किस्सा तुम्हारे मुँह से सुन सकें ! लेकिन बुआ ने तुम्हें जगाने को मना कर दिया था। कह रही थीं, तुम बहुत थके होओगे।"

गगन ने जरा अकचकाकर पूछा—"रात का क्या किस्सा तुम लोग सुनना चाहती थीं ?"

"यही कि आधीरात को तुम सिस के लिए डॉक्टर बुलाने को कैसे-कैसे गये और क्या-क्या हुआ ?

"और जब कि ऐसी आँधी चल रही थी, मूसलधार पानी पड़ रहा था और बादल गरज रहे थे।" मिनी ने सिहरकर कहा —"गगन दादा, तुम बड़े बहादुर हो !"

गगन ने एक कुर्सी पर बैठकर नाश्ते की तश्तरी अपनी ओर खींचते हुए कहा—"हिश्, आँधी-पानी से मैं नहीं डरता, लेकिन तुम लोगों से यह किसने कहा कि मैं डॉक्टर को बुलाने गया था ?"

"क्यों ? सुबह-सुबह डॉक्टर साहब खुद आये थे और उन्होंने बुआ को सारी बातें बतलायीं। वे तुम्हे देखने के लिए ऊपर भी गये थे कि कहीं तुम खुद भी तो बीमार पड़ने की तैयारी नहीं कर रहे !"

गगन ने कहा—"अच्छा ! और फिर भी मेरी नींद नहीं

खुली ? मेरी,—जो अपनी कच्ची नींद के लिए मशहूर है ।"

नीलम और मिनी गगन की बात पर हँस पड़ीं, क्योंकि कच्ची नहीं, बल्कि उसकी गहरी नींद के लिए ही सब कोई उसका मजाक उड़ाया करते थे । हाँ, बादल ने इस हँसी में हिस्सा नहीं लिया । वह स्थिर-गम्भीरता के साथ कचौड़ी के टुकड़े गले के नीचे उतारता जा रहा था ।

"बड़ी कच्ची नींदवाले हैं कि !" नीलम ने हँसते-हँसते ही कहा—"भाई, मैं तो नहीं जानती कि किसी और को सोते से जगाने में तुमसे ज्यादा मुसीबत उठायी जा सकती है । बाबा रे, आज सुबह तो तुम इस कदर खर्राटे ले रहे थे कि डॉक्टर साहब कहने लगे—'मुझे बड़ा अचम्भा है कि इतना शोर मचाकर यह खुद भी कैसे इतने आराम से सो सकता है' ।"

"अच्छा, चलो, रहने भी दो ।" गगन ने बनावटी झुँझलाहट के साथ कहा—"यह तो बतलाओ कि सिस का क्या हाल है ?"

लेकिन सिस की बाबत कोई कुछ नहीं बतला सका— यहाँ तक कि बुआ भी नहीं । उन्होंने कहा—"डॉक्टर साहब जरा देर के लिए तो आये ही थे। वे तुम्हें देखकर फौरन वापस लौट गये। चलते-चलते भी इतना तो मैंने पूछ ही लिया कि सिस को कोई छूत की बीमारी तो नहीं है ? उन्होंने कहा, नहीं । तो जब छूत की बीमारी नहीं है तो जी चाहे तो तुम लोग उसे जाकर देख आ सकते हो ।"

"मैं जाता हूँ ।" कहकर गगन उठ खड़ा हुआ, लेकिन कमरे से बाहर निकलते वक्त जब अचानक उसकी नजर बादल पर पड़ी तो उसने पाया कि बादल उदास होकर टकटकी लगाये उसकी ओर देख रहा है । तब उसे ख्याल आया कि आज बादल एक अक्षर भी नहीं बोला है । गगन ने दरवाजे पर रुककर पूछा—"क्यों बादल, क्या बात है ?"

बादल ने नाराजी-भरे गम्भीर स्वर में कहा—"कल रात जब तुम्हें मालूम हुआ कि सिस की तबीयत खराब है तो तुम्हें मुझको भी साथ ले लेना चाहिये था। सिस को और कोई जितनी जल्दी अच्छा कर सकता है, मैं उससे भी जल्दी अच्छा कर सकने का एक तरीका जानता हूँ—डॉक्टर से भी जल्दी और तुमसे तो बहुत ही जल्दी।"

नीलम ने बादल को चिढ़ाने की गरज से कहा—"जान पड़ता है, आज तुम सोकर पलँग से उल्टी ओर से उतरे हो।"

लेकिन बादल ने उसी गम्भीरता के साथ कहा—"शायद तुम्हें खयाल नहीं है कि मेरी पलँग दीवार से सटी हुई है और इसलिए मैं सिर्फ एक ही ओर से उतर सकता हूँ और रोज उसी ओर से उतरता हूँ।"

बादल की नाराजी और गम्भीरता को दूर करने का उपाय गगन को मालूम था। उसने कहा कि चलो, हम दोनों सिस को देख आवें। बादल फुर्ती से उठकर गगन के साथ हो लिया। सचमुच उसकी गम्भीरता और नाराजी पलक मारते दूर हो गयी।

जब दोनों भाई बूढ़ी दादी के घर पहुँचे तो वहाँ बैठक में फ्रांसिस के अलावा और कोई न था। वह बादल के दिये सिपाहियोंवाले खिलौने से खेल रहा था और चुपके-चुपके रोता भी जाता था। बादल ने जब देखा कि उसने तोप से गोले बरसाकर दुश्मनों के दो सिपाहियों को मार डाला और कप्तान को घायल कर दिया तो वह अचरज से सोचने लगा—"भला यह एक साथ ये दोनों काम कैसे कर सकता है।"

फ्रांसिस ने खेल के मैदान से लाशों और घायल सिपाहियों को हटाकर गगन और बादल की ओर देखकर कहा—"सिस बहुत बीमार है। तुम लोगों को शोरगुल न करना चाहिये, नहीं तो डाक्टर तुम्हें बाहर निकाल देगा।"

दर-अस्ल खुद फ्रांसिस से थोड़ी देर पहले यही बात कही गयी थी। सबेरा होने पर भी जब सिस पलँग से नहीं उठी और फ्रांसिस को मालूम हुआ कि वह बहुत बीमार हो गयी है तो वह चीख-चीखकर रोने-चिल्लाने लगा। तब डाक्टर ने उससे कहा कि अगर वह इस तरह शोर-गुल करेगा तो उसे मकान से बाहर कर दिया जायगा। फ्रांसिस वही बात गगन और बादल के सामने दुहरा रहा था।

गगन ने धीमी आवाज में पूछा—"सिस की तबीयत अब कैसी है ?"

फ्रांसिस उदास स्वर में बोला—"मैं खुद नहीं जानता; लेकिन मेरा खयाल है कि अभी वह सो रही है।"

इसी वक्त बूढ़ी दादी कमरे में आयीं और बादल के साथ गगन को देखकर उनके चेहरे पर सन्तोष का भाव दीख पड़ा। उन्होंने कहा—"मैं जानती थी कि तुम लोग आओगे।" फिर गगन की ओर मुखातिब हो उन्होंने इतनी धीमी आवाज में बोलना शुरू किया कि उसे फ्रांसिस न सुन सके। उन्होंने कहना जारी रखा—"तुम लोग क्या फ्रांसिस को अपने साथ ले जाओगे ? वह यहाँ रहेगा तो सारा दिन अकेला बैठा रोता रहेगा। मैंने तो अपनी जिन्दगी में ऐसा लड़का ही नहीं देखा, जो इस कदर रो सकता हो।"

गगन ने कहा—"जरूर, जरूर, लेकिन दादी, पहले यह तो बतला दो कि सिस की हालत अब कैसी है ? डाक्टर ने उसके बारे में क्या कहा है।"

बूढ़ी दादी ने जरा हिचकिचाहट के साथ फ्रांसिस की ओर देखा। लेकिन फ्रांसिस उस वक्त बादल की ओर देख रहा था, जो दोनों ओर के सिपाहियों को कतार में खड़ा कर रहा था। दादी या गगन की बातों की ओर उसका ध्यान बिलकुल नहीं था।

यह देखकर दादी ने धीरे-धीरे गगन से कहा—"सिस की हालत बहुत नाजुक है बेटा ! डॉक्टर ने कहा कि अगर यही हाल रहा तो सिस के पिता को खबर देनी पड़ेगी। डाक्टर तो अभी बैठे इस बात की इन्तजार में हैं कि शायद कुछ घण्टों में उसकी हालत में थोड़ा-बहुत सुधार हो।"

"जरूर होगा दादी, जरूर होगा।" गगन ने पीले पड़ते हुए कहा—"कल तो बिलकुल अच्छी थी। दादी, सिर्फ भीगने से ही क्या वह इतनी ज्यादा बीमार हो जा सकती है ?"

"नहीं बेटा, फ्रांसिस के खयाल से वह अपने मन की गहराई में पिछले कई दिनों से जो गहरी व्यथा छिपाये हुए थी, उसी ने अब इस रूप में प्रकाश पाया है।"

"लेकिन····" गगन ने कहना शुरू किया ही था कि दादी ने मुँह पर ऊँगली रखकर उसे चुप रहने का इशारा किया, क्योंकि फ्रांसिस अब इसी ओर देखने लगा था।

गगन ने कहा—"आओ फ्रांसिस, हम लोग बगीचे में चलकर लड़ाई का खेल खेलें।"

फ्रांसिस जब दोनों बच्चों के साथ घर से बाहर निकल गया तो बूढ़ी दादी ने सन्तोष की साँस ली और चुपचाप वे ऊपर, सिस के कमरे में, चली गयीं।

६

लगभग आध घण्टे बाद उन तीनों बच्चों में से एक बूढ़ी दादी के घर लौट आया और सब की आँख बचाता हुआ उस कमरे की ओर चला, जहाँ सिस बीमार पड़ी हुई थी। कमरे में जाकर उसने पाया कि सिस आँखें मूँदे बिस्तर पर लेटी हुई है। उसका एक हाथ माथे की ओर मुड़ा हुआ है और दूसरा पलँग की पटिया पर पड़ा हुआ है। बुखार की गर्मी से चेहरा तमतमा रहा है। यह चेहरा बादल को बड़ा भला मालूम हुआ, क्योंकि यह बादल ही था, जो सब की नजर बचाकर कमरे में घुस आया था। उसने सोचा—"सिस तो आज कल से भी अच्छी दीख पड़ती है। मुझे तो जान ही नहीं पड़ता कि वह बीमार भी है।"

बादल सिस की पलँग के पास जा उसे देखने में ऐसा तल्लीन हो गया कि बूढ़ी दादी दरवाजा खोलकर कब अन्दर आयी, यह उसे मालूम ही न हो सका। बादल को देखकर दादी चौंक पड़ी और उसकी घबराहट ने बादल को भी चौंका दिया। दोनों के मुँह से एक साथ ही घबराहट और आश्चर्य से भरी जो ध्वनि निकली, उससे सिस की तन्द्रा टूट गयी। उसने आँखें खोलकर चारों ओर देखा। बादल पर नजर पड़ते ही वह दोनों बाँहें आगे की ओर फैलाकर उठने की कोशिश करने लगी।

दादी ने बादल को एक ओर हटाते हुए दुलार-भरे स्वर में कहा—"लो बेटी, यह दवा पी लो।" कहकर उन्होंने हाथ का गिलास सिस के ओठों से लगाना चाहा, लेकिन वह गिलास को हाथ से अलग हटाकर बादल की ओर देखने लगी। उसका चेहरा

बुखार की गर्मी से तमतमा रहा था और आँखें चमक रही थीं। उसने कहा—"भैया रे, कितने दिन पर तुम आज दीख पड़े हो!"

बादल यह जानकर खुश हुआ कि सिस उसी की इन्तजार कर रही थी। वह जल्दी-जल्दी सिस की पलँग के पास बढ़ आया। लेकिन उसकी यह खुशी तुरत ही काफूर हो गयी, जब सिस की अगली बात से उसने यह जाना कि वह उसे पहचान भी नहीं रही है। सिस कहती जा रही थी—"सेसिल, तब तुम बहुत बच्चे थे; अब तो कितने बड़े हो गये हो!......देखो, अभी पानी बरस रहा है। तुम मेरे पास आ जाओ, नहीं तो भीग जाओगे और जानते तो हो कि तुम्हें कहीं सर्दी लग गयी तो माँ को कितनी घबराहट होगी।"

सिस अपनी तकिया पर गिर पड़ी, लेकिन दूसरे ही क्षण उठकर रोती हुई चिल्ला पड़ी—"उसे रोको, उसे रोको। देखो, सेसिल को लेकर घोड़ी भागी जा रही है। मैं इतनी थक गयी हूँ कि उसके पीछे दौड़ नहीं सकती।"

कहते-कहते उसकी आवाज मद्धिम पड़ गयी और उसने फुस-फुसाते हुए कुछ अटपटे-से शब्द और कहे।

बादल अब अपने को सँभाल नहीं सका। वह एक कोने में हट गया, जिससे कोई उसे देख न सके और सिसक-सिसक कर रोने लगा। रोने की आवाज सुनकर सिस कुछ-कुछ होश में आयी। उसने बड़े उदास और गिरे हुए स्वर में कहा—"मत रोओ फ्रांसिस, इससे अब कोई फायदा नहीं है। सेसिल मर गया है और अब कभी हम लोग उसे नहीं देख पावेंगे।"

बादल किसी तरह अपनी सिसकियों को दबाकर बाहर निकल आया और एक सीढ़ी पर बैठ गया। उसके दिमाग में तरह-तरह की बातें चक्कर काटने लगीं। क्षण भर सिस समझ रही थी कि सेसिल उसके पास है, फिर उसे लगा कि वह घोड़ी पर

बैठकर उससे दूर भागा जा रहा है और उसके बाद उसे यह बात याद आयी कि वह तो मर चुका है। सिस के हृदय की इस विकलता को बादल सह नहीं सका। उसका माथा चक्कर खाने लगा। थोड़ी देर तक वह कुछ सोच नहीं सका। इस वक्त उसे अपनी वह स्कीम भी भूल गयी थी, जिसके मुताबिक सिस को एक दूसरा भाई देकर उसने उसे खुश और अच्छा कर देना सोचा था।

असल में इस वक्त बादल छिपकर सिस के पास इसीलिए आया था कि उसे बतला दे कि वह उसके लिए एक नया भाई लाने जा रहा है, इसलिए अब उसे दुखी न रहना चाहिये। बादल का विश्वास था कि यह खबर पाकर सिस की उदासी और बीमारी दोनों ही भाग जायँगी; लेकिन उसे यह कब पता था कि उसकी हालत इतनी ज्यादा खराब है?

कुछ देर बाद जब बादल अपने को सँभाल सका तो उसने अपनी पुरानी स्कीम को कार्य रूप में परिणत करने का निश्चय किया। सीढ़ियों से उतर कर वह गोशाला की ओर चला, जहाँ बूढ़ी दादी के गाय-बैल-घोड़े बाँधे जाते थे और पुराना सामान पड़ा हुआ था। बैल खेतों पर गये थे, गाय चरने गयी थी, सिर्फ घोड़ी अस्तबल में बँधी हुई थी। बगलके सायबान में दुनिया भर का पुराना लक्कड़-खप्पड़ पड़ा हुआ था। बादल ने एक बार चारों ओर देखा कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है और तब वह अन्दर चला गया। वह किसी पर यह बात जाहिर नहीं होने देना चाहता था कि वह क्या करने जा रहा है; खासकर गगन पर तो बिलकुल ही नहीं; क्योंकि एक तो वह कल की तरह उसकी इस स्कीम की खिल्ली उड़ावेगा और दूसरे यह भी हो सकता है कि उसे अपनी स्कीम के मुताबिक काम करने से कतई रोक दे। इसीसे बादल सब काम गुप-चुप कर लेना चाहता था।

बादल ने अन्दर जाकर इधर-उधर देखा। बादल को देख घोड़ी गर्दन उठाकर उसकी ओर ताकने लगी। बादल ने कहा—"नहीं, नहीं, मैं तुझे नहीं ले जाऊँगा। कहीं तू कल की तरह हमारे नये सेसिल को लेकर भागी तो मुश्किल हो जायगी। फिर यह नया सेसिल इतना बड़ा भी तो नहीं होगा कि तुझ पर सवारी कर सके।"

एक कोने में बादल ने एक छोटी ठेलागाड़ी देखी—ऐसी गाड़ी जो छोटे-मोटे सामानों को ढोने के लिए बनायी जाती है, या जैसी बच्चों को टहलाने वाली गाड़ियाँ हुआ करती हैं। उसमें एक पहिया आगे और दो पीछे थीं। पीछे की ओर एक हैंडिल लगा था, जिससे उसे ठेलकर ले जाया जाता था। बादल ने आजमाकर देखा तो वह खासी हल्की भी थी। इससे उसे बड़ी खुशी हुई। खूब सावधानी से उसने गाड़ी बाहर निकाली। घोड़ी पर कसने वाले गद्दे को उसमें डाल लिया; फिर जहाँ तक हो सका चुपके-चुपके वह फाटक खोलकर बाहर निकल आया।

सामने की मोड़ से घूम कर जब वह खुले मैदान में पहुँचा तो उसने बेफिक्री की साँस ली। अब इधर उसे कोई नहीं छेड़ेगा। भरसक तेजी से वह गाड़ी ठेलता हुआ आगे बढ़ चला। उसे जरा-सी दिक्कत तभी होती थी, जब चढ़ाई मिलती थी। तब उसे गाड़ी को खींचकर ले चलना पड़ता था। समतल या ढालवीं जमीन पर तो गाड़ी अपने आप लुढ़कती चलती थी। इसी तरह कभी गाड़ी को घसीटते, कभी लुढ़काते, लगभग दो घण्टे बाद, पसीने से तर-ब-तर बादल राजरप्पा जा पहुँचा।

और अब, जब वह अपनी मंजिल पर पहुँच गया था, उसके मन में इस बात का सन्देह उठने लगा कि वह अपनी स्कीम को सफल बना भी पावेगा या नहीं। पिछले दिन जब उसने बसंती से बातें की थीं तो उसे यह नहीं जान पड़ा कि वह अपना एक

बच्चा देने के लिए आसानी से राजी हो जायगी; गो, बादल का खयाल था कि उसे कोई एतराज न होना चाहिये, क्योंकि उसके इतने सारे बच्चे हैं। बादल तो सिर्फ एक ही बच्चा चाहता है, और वह भी छोटा-सा। कोई बड़ा बच्चा तो चाहता ही नहीं। अगर बसंती ने बच्चे को देने में ना-नुकर की तो यह उसका स्वार्थीपना होगा। लेकिन बादल को लगता था कि वह जरूर गड़बड़ करेगी।

मान लो, बादल ने सोचा, कि बसंती ने बच्चा देने से इन्कार कर दिया! लेकिन इस खयाल के आते ही उसके पैर जमीन में गड़-से गये। तब तो उसकी इतनी सारी मिहनत बेकार जायगी। लेकिन उसे मिहनत के बेकार जाने का इतना खयाल नहीं है, जितना इस बात का कि उसे खाली हाथ लौटना पड़ेगा, या यों कहो कि खाली गाड़ी लेकर लौटना पड़ेगा और सिस बेचारी अपना नया भाई नहीं पा सकेगी।

लेकिन तुरत ही बादल को खयाल हुआ कि ऐसी निराशा-जनक बात ही पहले क्यों सोचनी चाहिये? हो सकता है कि मौके पर बसंती वैसी स्वार्थिन न साबित हो, जैसी बादल उसे समझ रहा है। और यही सब सोचता हुआ बादल आगे बढ़ता गया।

अब बसंती का घर दीख पड़ने लगा था। घर के सामने की थोड़ी-सी जमीन उन लोगों ने बाँस-लकड़ियों से घेर रखी थी, जिसमें फुलवारी और शाक-सब्जी लगी हुई थी। बसंती के लड़के कल ही की तरह आज भी वहाँ खेल रहे थे। उनके हँसने-बोलने की आवाज बादल को साफ-साफ सुन पड़ती थी।

अब तक बादल का मन आशा और उत्साह से भर आया था। उसे याद आया कि अभी कल ही बसंती ने कहा था कि कभी-कभी तो उसकी समझ में नहीं आता कि इतने सारे बच्चों का वह क्या करे। तो फिर एक बच्चा दे देने में उसे एतराज क्या

हो सकता है ? शायद है कि वह एक की जगह दो बच्चे देने को राजी हो जाय, बशर्ते कि बादल को दो की जरूरत हो। लेकिन उसे दो की जरूरत क्या है ? एक ही काफी है। हाँ, मुश्किल होगी चुनाव में कि इतने बच्चों में से किसको वह ले जाय।

लेकिन खैर, चुनाव में भी खास क्या मुश्किल होगी ? दो चीजें देखनी उसके लिए जरूरी हैं—एक तो यह है कि वह लड़का हो और दूसरी यह कि उसकी उम्र दो साल के लगभग हो। बादल का वश चले तो वह बसंती के बच्चों में से सबसे अच्छे बच्चे को ले जाय, लेकिन फिर उसने सोचा कि और बातों के लिए वह ज्यादा झंझट नहीं करेगा, बशर्ते कि उसे दो साल की उम्र का एक लड़का मिल जाय।

बादल का दिमाग तो यह सारी बातें सोच रहा था, लेकिन उसकी आँखें बाँस के बाड़े के अन्दर खेलते बसंती के बच्चों की ओर लगी हुई थीं। अचानक उसने देखा कि उनमें से एक बच्चा औरों से अलग होकर चुपचाप बाड़े के बाहर निकल आया और अपने छोटे-छोटे पाँवों से तेजी के साथ बादल की ओर दौड़ चला। ज्यों ही वह बाड़े से बाहर निकला, वह और बच्चों की आँखों से ओझल हो गया—लेकिन इस बात की ओर न उनका ध्यान ही था, न शायद उन्हें इसकी फिक्र ही थी; क्योंकि वे पहले ही की तरह शोर-गुल करते और खेलते रहे।

इस बीच वह डगमगाता हुआ छोटा-सा बच्चा बादल के नजदीक आ पहुँचा था। बादल टकटकी लगाकर उसे देख रहा था। जब वह कुछ ही गज के फासले पर रह गया तो बादल ने गाड़ी का हैंडिल छोड़कर धीरे से ताली बजायी।

बादल को याद नहीं आया कि उसने बसंती के इस बच्चे को इससे पहले कभी देखा हो। लेकिन इस वक्त जब उसने उसे देखा तो उसे लगा कि यह तो ठीक वही बच्चा है जिसे, अगर उसे

चुनाव का अधिकार होता तो, वह बसंती के सब बच्चों में से सेसिल की जगह पर ले जाने के लिए चुनता। न सिर्फ वह लड़का ही था, बल्कि उसकी उम्र भी दो साल से ज्यादा नहीं दीख पड़ती थी। उसके बाल घुँघराले तथा आँखे बड़ी-बड़ी और चमकीली थीं। इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी ? वह ऐसा प्यारा बच्चा था कि अगर बादल उसे ले जाकर सिस को दे पा सकता तो जल्दी ही वह उसे उतना ही प्यार करने लग जाती, जितना सेसिल को करती थी।

बादल के पास आकर बच्चा खड़ा हो गया और बादल को तथा उससे भी ज्यादा दिलचस्पी के साथ उसकी गाड़ी को देखने लगा। थोड़ी देर इस तरह देखते रहकर वह आगे बढ़ा और बोला—"तेतिल इस पर घूमेगा।"

सारी बातें बादल के मन के मुताबिक अपने आप होती जा रही हैं, यह देखकर वह खुशी से पागल-सा होने लगा। उसने कहा—"तो बैठ जाओ इस पर।"

बच्चा अपनी छोटी-छोटी टाँगे उठाकर गाड़ी पर चढ़ता हुआ बोला—"तेतिल को गिराना मत।"

बादल ने कोई जवाब नहीं दिया। बच्चा ज्यों ही गाड़ी पर बैठा, वह हैंडिल पकड़कर अपनी ताकत भर तेजी से घर की ओर भाग चला, क्योंकि उसे खयाल था कि बच्चा कहीं अपना इरादा बदल न दे और गाड़ी से उतरने की जिद न करने लगे। इधर गाड़ी की रफ्तार ज्यों-ज्यों तेज होती थी, बच्चा खुशी से तालियाँ पीटता था, हँसता था और बादल को बढ़ावा देता था। लेकिन लगभग आध मील इस तरह दौड़ने के बाद बादल की साँस उखड़ गयी। उसने हैंडिल छोड़ दिया और जमीन पर उगी घास पर बैठ गया।

बच्चे ने पूछा—"तुम थक गये ? तेतिल नई थका।"

बादल ने अपने कुर्ते से अपने आपको पंखा झलते हुए कहा —"नहीं जी, नहीं; लेकिन देखो, मैं दौड़ता आया हूँ और तुम मजे से गाड़ी पर बैठे रहे हो।"

बच्चे ने सिर हिलाकर बतलाया कि वह बादल की बात समझ गया है। जरा देर रुककर उसने पूछा—"तुमारा नाम ?"

"बादल।"

"मेला तेतिल।"

अब तक बादल कुछ सुस्ता चुका था और बच्चे की बातों का जवाब देने के लिए तैयार हो गया था। उसने कहा—"नहीं जी, यह भी कोई नाम है ! तुम्हारा नाम कुछ और होगा, तुम्हे कहना नहीं आता।"

बादल तरह-तरह से बच्चे से पूछकर भी कुछ जान न पाया कि असल में उसका नाम है क्या; लेकिन इतनी बात तो वह पक्की तौर पर समझ रहा था कि उसका असली नाम और चाहे जो कुछ हो, तेतिल नहीं हो सकता।

धीरे-धीरे वह बसंती के सभी बच्चों के नाम मन-ही-मन गिन गया—लेकिन किसी से इसका नाम मेल नहीं खाता। अलबत्ता एक लड़की है पारुल—जाने कहाँ से यह बंगाली नाम रख छोड़ा है उसने अपनी लड़की का—हाँ, उसीसे किसी कदर तेतिल नाम का मेल बैठ सकता है। लेकिन तब क्या वह लड़के के बदले एक लड़की को उठा लाने की गलती कर बैठा है ? सिस भला वैसे भाई को लेकर क्या करेगी, जिसे आखीर में लड़की साबित होना है।

बादल का सारा उत्साह जैसे ठण्डा पड़ गया। उसने मरी हुई-सी आवाज में पूछा—"तेतिल क्या लड़की का नाम होता है ? तुम लड़की हो ?"

बच्चे ने जरा गम्भीर होकर कहा—"तेतिल लड़की नईं, मर्द-बच्चा !"

बच्चे के जवाब से बादल की जान में जान आयी। अब वह सुस्ता चुका था, इसलिए फिर गाड़ी ठेलता हुआ आगे बढ़ा। लेकिन इस बार जैसे बच्चे का वजन बढ़ गया हो। बादल पूरी ताकत लगाकर गाड़ी खींच रहा था और करीब था कि वह फिर थककर बैठ जाय कि एक लम्बी चढ़ाई आ गयी। अब किसी तरह भी बच्चे के साथ गाड़ी को ऊपर चढ़ाना उसके लिए सम्भव नहीं था, इसलिए उसने उसे गाड़ी पर से उतार लिया और कहा कि अब थोड़ी दूर उसे उसके साथ टहलते हुए चलना चाहिए। खुश-किस्मती से बच्चे को इसमें कोइ आपत्ति नहीं हुई और वह बादल की उँगली पकड़कर चढ़ाई चढ़ने लगा। जब वे लगभग आधी चढ़ाई खत्म कर चुके तो अचानक बच्चे ने कहा —"सेसिल को भूख लगी है।"

भूख तो बादल को भी लगी थी और खासी अच्छी भूख, लेकिन वह जानता था कि पेट भरने का यहाँ कोई उपाय नहीं किया जा सकता।

बचा बादल की उँगली पकड़कर भी काफी सुस्त चाल से चल रहा था और जैसी चढ़ाई वे अभी चढ़ रहे थे, घर पहुँचने के रास्ते में अभी वैसी कई चढ़ाइयाँ थीं। इसलिए यह बात तो तय थी कि जब तक ये लोग घर पहुँचेंगे, भोजन का वक्त गुजर चुका रहेगा—कोई ताज्जुब नहीं अगर नाश्ते का वक्त भी आवे और गुजर जाय। इसलिए बादल ने भोजन का खयाल छोड़कर यह सोचना शुरू किया कि सिस जब इस नये सेसिल को देखेगी तो कितनी खुश होगी और कितनी जल्दी इसे प्यार करने लगेगी। लेकिन एक झंझट फिर निकल आयी। बच्चे ने जो कपड़ा पहन रखा है, वह बहुत पुराना हो गया है और उसमें कई जगह पेबंद भी लगे हुए हैं। लेकिन बावजूद अपने पुराने और पेबंद-लगे कपड़ों के वह इतना प्यारा लगता है कि सिस इसका कुछ खयाल

न करेगी।

और यह बच्चा सिर्फ देखने में ही प्यारा नहीं लगता, बल्कि स्वभाव का भी बड़ा अच्छा है। बात की बात में वह बादल से इस तरह हिल-मिल गया, जैसे जाने कब की पहचान हो। फिर इतनी देर तक न वह रोया-मचला, न उसने किसी बात के लिए जिद की। इसके अलावा बादल ने जो कुछ कहा, उसे खुशी-खुशी मान भी लिया। यहाँ तक कि गाड़ी का मोह छोड़कर अब वह पैदल चल रहा है।

लेकिन घर से जब वे लगभग एक मील की दूरी पर रह गये तो बच्चा थककर एक जगह जमीन पर बैठ गया और उसके होठों के कोने त्रिकोण बनाने लगे। बादल घबराया, क्योंकि वह जानता था कि इस मुँह बिचकाने के बाद ही आँसू भी आते हैं।

बच्चे ने कहा—"तेतिल थका है, भूखा है। तेतिल छे अब चला नईं जाता।"

"लेकिन तेतिल, भाई, जरा और हिम्मत करो। अब बहुत दूर नहीं चलना है।"

"तेतिल नईं चल सकता।" बच्चे ने दृढ़ निश्चयपूर्वक अपने घुँघराले बालोंवाले सिर को हिलाते हुए कहा—"तेतिल धीले-धीले जा··गा।"

और अपनी बाहों पर सिर रखकर वह लेट गया और धीरे-धीरे आँखें मूँदने लगा।

घबराहट से बादल को रुलाई-सी आने लगी। इतनी परेशानी और मिहनत-मशक्कत के बाद भी अगर वह बच्चे के साथ खैरियत से घर न पहुँच सका, तब तो बड़ा बुरा होगा।

बादल ने झुककर उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा—"तेतिल, भैया, तुम्हें अच्छा लड़का बनने की कोशिश करनी चाहिए।"

"तेतिल भौत अच्छा लड़का है।" बच्चे ने आधी-आधी आँखें खोलकर 'है' पर ज्यादा जोर देते हुए कहा। अब तक वह लगभग नींद के पास पहुँच चुका था।

"बेशक, बेशक, तुम बहुत अच्छे लड़के हो; लेकिन मैं यह कह रहा था कि तुम्हें इस वक्त सोना न चाहिए। दोपहर में तो छोटे-छोटे बच्चे ही सोया करते हैं।"

बच्चे की आँखे अब तक फिर मुँद चुकी थीं। उसने बुदबुदाते हुए कहा—"तेतिल छोटा बच्चा नईं। तेतिल सयाना बच्चा।"

बादल ने बच्चे को हल्के-हल्के झकझोरते हुए कहा—"देखो तेतिल, तुम्हे अब चलना चाहिए। सिस तुम्हारी राह देख रही है। वह बहुत बीमार है। तुम्हें उसका छोटा भाई बनना पड़ेगा। समझे!"

बच्चा अचानक उठकर बैठ गया। उतावला-सा बोला—"तेतिल भी छिछ के पास जाना चाहता। तेतिल छिछ को भौत प्याल कलता। तेतिल को छिछ के पाछ ले चलो।"

अपनी .कोशिश को इस तरह कामयाब होती देख बादल उछल पड़ा। दोनों फिर आगे बढ़ चले। लेकिन थोड़ी दूर चलने पर बादल ने सोचा कि बच्चे की यह गलतफहमी दूर कर देनी जरूरी है कि वह भी सिस को प्यार करता है; क्योंकि सिस को उसने कभी देखा तो है नहीं, उसे प्यार किस तरह कर सकता है?

लेकिन तेतिल अपनी अचम्भा भरी आँखें फाड़-फाड़कर उसकी ओर देखता हुआ कहने लगा—"तेतिल जलूल छिछ को प्याल कलता—अपनी प्याली छिछ को।"

"तेतिल बेशक इस सिस को नहीं। तुम शायद अपनी बहनों की बात कह रहे होओगे।" कहकर बादल ने बसंती की तीनों-चारों लड़कियों के नाम गिनाये।

तेतिल साफ इन्कार कर गया। कहने लगा, वह इनमें से

किसी को जानता भी नहीं ।

अब बादल के अचम्भे की बारी थी। वह सोचने लगा कि इस बच्चे की याद्दाश्त कितनी कमजोर है कि इतनी-सी देर मे वह अपनी बहनों का नाम तक भूल गया; लेकिन खैर, यह अच्छा ही है, क्योंकि इससे वह और आसानी से सिस से घुल-मिल जा सकेगा।

सिस का नाम लेने से यद्यपि तेतिल के मन और शरीर में नयी ताकत और नया उत्साह भर गया था; लेकिन वह देर तक टिक नहीं सका। चढ़ाई खत्म होते-न-होते वह गाड़ी पर चढ़कर लेट गया और बात-की-बात में गहरी नींद में सो गया। खैरियत थी कि अब और चढ़ाई नहीं थी, इसलिए बादल को गाड़ी ठेल-कर उसे सिस के पास तक ले जाने में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई।

दोपहर के भोजन के वक्त से पहले तक बादल की गैरहाजिरी का किसी को पता भी नहीं चला; लेकिन जब भोजन का वक्त आकर गुजर गया और बादल और लड़कों के साथ घर नहीं लौटा, तब बुआ को पहले-पहल मालूम हुआ कि वह सुबह से ही उन सबों के साथ नहीं रहा है। लेकिन इस बात से उन्हें बहुत ज्यादा घबराहट नहीं हुई। बात यह थी कि इस तरह अकेले घूमने-फिरने की बादल को आदत थी; लेकिन अगर कभी उसको भोजन के वक्त पहुँचने में देर भी हो जाती थी, तब भी ऐसा तो शायद ही कभी हुआ हो कि वह भोजन के लिए बिलकुल आया हो न हो। आज जब भोजन के बाद शाम के नाश्ते का वक्त भी आकर गुजर गया और बादल का कहीं पता न चला तब बुआ अपनी घबराहट न रोक सकीं। वे बार-बार गगन से पूछने लगीं कि बादल आखिरी बार कब और कहाँ देखा गया था ?

यद्यपि गगन को खुद इस बात का पता न था कि बादल ठीक-ठीक किस वक्त उन सबों से अलग हुआ था; लेकिन यह बात तय थी कि जब वे बूढ़ी दादी के यहाँ गये, उसके बाद बहुत देर वह उन सबों के साथ नहीं रहा।

फ्रांसिस, जो सुबह से ही गगन के साथ बहुत हिला हुआ था और एक मिनट के लिए भी उसका साथ छोड़ने को राजी नहीं दीखता था, कहने लगा—"हाँ, उसने कहा था कि वह बहुत जरूरी काम में मशगूल होने जा रहा है और देर तक उसे फुर्सत नहीं मिलेगी।"

"बहुत जरूरी काम!" नीलम का कौतूहल जरा-जरा-सी बात में जाग जाया करता था। उसने कहा—"मुझे तो अचम्भा लगता है कि उसे कौन-सा जरूरी काम आ पड़ा!"

बुआ ने कहा—"गगन, जरा तुम जाकर पता तो लगाओ भैया, कि आखिर वह चला कहाँ गया! मुझे तो बड़ी फिक्र लग लग रही है।"

गगन ने कहा—"अरे, इसमें फिक्र की क्या बात है? हम लोग अभी तुरत उसे ढूँढ़े लाते हैं—वह या तो अपने विलायती चूहों को दाना खिला रहा होगा, या कबूतरों को उड़ना सिखा रहा होगा, या अपनी फुलवारी खोद रहा होगा, या इसी तरह के किसी और काम में मशगूल होगा।"

लेकिन बादल इनमें से किसी काम में मशगूल नहीं था। इस घड़ी वह घर से थोड़ी दूर के फासले पर रह गया था और इस बात की कोशिश में था कि तेतिल सो न जाय।

सचमुच यह जरा अचरज की बात थी कि गगन को उस बात का जरा-सा भी शक नहीं हुआ, जिसके लिए बादल कल से ही तैयारियाँ कर रहा था, बल्कि उलटे वह तो यह सोच रहा था कि बादल कैसा पत्थर-दिल है कि जब सिस इस कदर बीमार है तो वह मौज से सैर-सपाटे कर रहा है।

फ्रांसिस को इस बात का पता नहीं था कि सिस कितनी ज्यादा बीमार है। यह बात जानबूझकर उससे छिपायी गयी थी। इसीसे गगन वगैरह के साथ वह सवेरे से बड़ा खुश था। हाँ, गगन और नीलम जरूर बारी-बारी से दादी के यहाँ जाकर सिस का हाल-चाल पूछ आते थे।

बादल की खोज के लिए जब गगन और नीलम बाहर निकले तो नीलम तो दादी के बगीचे की ओर चली गयी, क्योंकि उसे विश्वास था कि बादल बेर या जामुन या अमरूद वगैरह तोड़कर

खाते-खाते कहीं बगीचे में मौज से सो गया होगा गगन ने कहीं जाने से पहले जरा सिस का हालचाल जान लेना चाहा, इसलिए वह दादी के मकान की ओर गया। फाटक के बाहर ही डाक्टर की साइकिल रखी हुई थी। गगन दबे पाँवों कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि उसने सामने से डाक्टर और दादी को आते देखा। डाक्टर का चेहरा देखते ही वह समझ गया कि सिस की हालत पहले से भी ज्यादा खराब है। बात ठीक भी थी। गो, सिस का बुखार इस वक्त उतर गया था और वह होश में भी थी, लेकिन कमजोरी उसे इतनी ज्यादा हो गयी थी कि डाक्टर को शक था कि वह सँभल सकेगी; इसीसे वे सिस के पिता के पास आदमी भेजने जा रहे थे। गगन ने सुना, डाक्टर कह रहे थे—"मैं अभी तुरत जा कर किसी को सिस के पिता के पास भेजे देता हूँ। अब उन्हें सिस की हालत से जानकार करा ही देना चाहिए। मेरा खयाल है, चिराग जलते वे यहाँ पहुँच जा सकते हैं।"

डाक्टर के चले जाने पर दादी भी अन्दर चली गयी। गगन मन में गहरी उदासी भरे चुपचाप वहाँ लौट आया, जहाँ और बच्चे थे।

फ्रांसिस जेब में बेर भरे हुए था और एक-एक निकालकर मुँह में डालता जाता था। गगन को देखकर उसने पूछा—"सिस आखिर बिछौने से कब उठेगी? आज तो वह बहुत आलसी हो गयी है। अब अगर वह झटपट उठ नहीं जायगी तो फिर रात हो जायगी और उसके बाद वह उठी तो, नहीं उठी तो, सब बराबर ही होगा।''''''अच्छा, तुम कभी दिनभर बिछौने पर पड़े रहे हो? मैं तो रहा हूँ। जब मुझे चेचक निकला था। निकला तो सिस को भी था, लेकिन मुझे उससे ज्यादा था।"

नीलम ने पूछा—"क्या बहुत ज्यादा था?"

पूछने को उसने पूछा तो जरूर लेकिन खुद ही नहीं समझ सकी, कि क्या पूछ रही है, क्योंकि गगन ने इशारे से उसे बता दिया था कि सिस की हालत बहुत खराब है और यह भी कि यह बात फ्रांसिस पर जाहिर नहीं होना चाहिए। इस खबर ने उसे घबराहट में डाल दिया था।

फ्रांसिस ने अचरज से नीलम की ओर देखते हुए जवाब दिया—"चेचक और क्या ?"

गगन ने बात का रुख बदलते हुए कहा—"समझ में नहीं आता, आखिर बादल चला कहाँ गया ? इतनी देर तो कभी वह बाहर नहीं रहता था। अबतक उसे खासी भूख भी लग आयी होगी।"

नीलम ने कहा—"चलो, हम लोग जरा सड़क की ओर कुछ दूर चलकर उसको ढूँढ़ आवें। हो सकता है कि तितलियों की फिराक में वह कुछ आगे निकल गया हो।"

सभी लड़के बगीचे से निकलकर सड़क पर आये और अभी वे कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि उन्होंने ने मोड़ से घूमकर ठेला गाड़ी ठेलते हुए बादल को अपनी ओर आते देखा।

गगन, नीलम और मिनी सब-के-सब एक साथ चिल्ला उठे—"वह रहा बादल !"

गगन ने कहा – "लेकिन वह गाड़ी पर लिये क्या आ रहा है ?" और तुरत ही उसे बादल की रहस्यपूर्ण स्कीम की बात याद आ गयी, जिसके बारे में वह कल गगन को बतला रहा था। उसे विश्वास हो गया कि हो-न-हो, बादल सिस के लिए एक नया भाई ठेला गाड़ी पर लिये आ रहा है।

बादल ने ज्यों ही इन लड़कों को देखा, उसने अपनी चाल और तेज कर दी और जब कुछ और पास आ गया तो बड़े अभिमान से कहने लगा—"देखो, मैं ले आया, मैं ले आया !"

नीलम ने अचरज में भरकर कहा "लेकिन आखिर वह ले क्या आया ?" अभी उसने अपनी बात पूरी ही की थी कि बादल गाड़ी समेत उनके बीच आ पहुँचा। नीलम ने कहा—"अरे, यह तो एक बच्चा जाने कहाँ से उठा लाया !"

तेतिल गाड़ी पर गहरी नींद में सोया हुआ था। उसके घुँघ-राले बाल उसके मुँह पर बिखरे हुए थे, जिससे उसका चेहरा थोड़ा-बहुत ढका हुआ था। बादल ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा—"मैं इसे उठा नहीं लाया, चुरा लाया हूँ। फ्रांसिस और मिस का जो भाई मर गया है, उसकी जगह पर यह उनका भाई बनेगा।"

क्षणभर के लिए वहाँ सन्नाटा छा गया। गगन ने सुबह से ही सबको हिदायत कर दी थी कि फ्रांसिस के सामने सेसिल की कोई बात न चलायी जाय और सभी लड़कों ने बड़ी सावधानी से इस बात का खयाल रखा था। अब बादल ने आकर अचानक सब गुड़ गोबर कर दिया।

बादल की बात सुनकर फ्रांसिस ने आगे बढ़कर गाड़ी में सोये हुए बच्चे को देखा और अचानक रो-रोकर कहने लगा—"इसे ले जाओ, इसे दूर करो।"

अपनी स्कीम के इस पहले नतीजे को देखकर बादल का मन दुखी हो गया था। नीलम ने उससे धीरे-धीरे कहा "देखा तो, तुमने क्या कर डाला ! फ्रांसिस सुबह से अब तक एक बार भी नहीं रोया था।"

फ्रांसिस की सिसकियाँ धीरे-धीरे और तेज होती जा रही थीं। उसने रोते-रोते कहा—"इसे यहाँ से दूर हटाओ। यह तो बिलकुल हमारे सेसिल-जैसा है।"

बादल का हौसला इस बात से बढ़ गया। उसने कहा—"जरूर है; और इसीसे तो मैंने इसी को चुना है।"

गो, यह बात सही नहीं थी, क्योंकि इस मामले में किसी तरह के चुनाव का उसे मौका ही नहीं मिला था।

गगन ने गाड़ी पर झुककर बच्चे के घुँघराले बालों को उसके मुँह पर से हटाते हुए पूछा—"बादू, यह लड़का कौन है ?"

बादल ने कहा—"मैंने तो तुमसे कहा था, बसंती के बच्चो में से एक को उठा लाऊँगा। वही मैंने किया है। इसका नाम तेतिल है।"

जाने गगन के छूने से या अपना नाम लिये जाने से, इसी वक्त बच्चा उठकर गाड़ी पर बैठ गया और आँखें मलने लगा।

नीलम ने कहा—"अहा, कैसा प्यारा बच्चा है! लेकिन यह बसंती के बच्चो में से कोई भी नही है।"

इस बीच फ्रांसिस नीलम के पास आ खड़ा हुआ था और उसके कपड़ों में उसने अपना मुँह छिपा लिया था।

तेतिल इतने लड़कों के बीच आकर भी घबराया नहीं था, बल्कि एक-एक करके सब का चेहरा देख रहा था। आखिर बारी-बारी से सब को देखकर उसने बादल की ओर बाँहें फैलाकर कहा—"तेतिल को गाड़ी से उतारो। तेतिल छिछ के पास जाना चाहता।"

बादल को इस बात से बड़ी खुशी हुई और थोड़ा अभिमान भी हुआ कि इतने लड़कों के बीच तेतिल ने उसी की मदद चाही। उसने आगे बढ़कर उसे गाड़ी से उतार लिया।

गाड़ी से उतरकर उसे थपथपाते हुए तेतिल ने कहा—"भौत अच्छी गाड़ी!"

बादल ने औरों को समझाते हुए कहा—"यह कह रहा है कि गाड़ी बहुत अच्छी है।" सही में औरों की बनिस्बत वह तेतिल को ज्यादा जानता था और दूसरों से इस बात की उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वे उसके माफिक तेतिल की बात

समझ सकते हैं।

तेतिल की आवाज सुनकर फ्रांसिस चौंक पड़ा। उसने नीलम के कपड़ों से अपना मुँह निकालकर एक बार फिर बच्चे की ओर देखते हुए कहा—"यही तो हमारा सेसिल! हमारा अपना सेसिल!"

"क्या कहा?" गगन और नीलम दोनों एक साथ चिल्ला पड़े। फिर नीलम ने उदासी के साथ अपना सिर हिलाकर कहा—"नहीं फ्रांसिस! यह वह नहीं है। यह तो कोई एक बच्चा है, जिसे बादल ले आया है।"

"लेकिन मैं कहता हूँ कि यह वही है!" फ्रांसिस ने उत्तेजित होते हुए कहा और वहाँ दौड़ गया जहाँ बादल और तेतिल खड़े थे।

"सेसिल! सेसिल!" उसने पुकारकर कहा—"तुम क्या मुझे नहीं पहचानते?"

क्षणभर के लिए गगन और नीलम की साँस, रुकती-सी जान पड़ी। फ्रांसिस ने जिस ढंग से बात कही थी, उससे उन्हें उम्मीद होने लगी कि कहीं उसकी बात सच्ची ही न हो और आखिर यह बच्चा असली सेसिल ही न साबित हो जाय, जिसे अब तक सब लोग मरा हुआ समझ रहे थे। यह तो तय था कि तेतिल बसंती के बच्चों में से एक भी नहीं था।

"सेसिल! सेसिल!!" फ्रांसिस ने दुबारा फिर पुकारा—"तुम क्या मुझे नहीं पहचानते?"

"जलूल पिछानता," तेतिल ने अनमना होकर कहा—"तुम फाछिछ; लेकिन तेतिल छिछ के पास जायगा।"

"बादू, बादू, सुना तुमने?" गगन हद से ज्यादा उत्तेजित होकर बोला—"यह कौन है? तुमने इसे कहाँ पाया? फ्रांसिस कहता है कि यही उसका वह छोटा भाई है, जो नदी में डूब गया था।"

लेकिन बादल ने न तो गगन की बात सुनी, न इस वक्त वह और कुछ सुनने के लिए तैयार था।

हाथ के इशारे से उन सबों को हटाते हुए उसने कहा—"तुम सब लोग जाओ। मैं तेतिल को लेकर सिस के पास जा रहा हूँ।" कह कर और तेतिल की उँगली पकड़ कर वह इतमीनान से सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

उत्तेजना की हद को जाने पर भी अपनी आवाज को इतनी धीमी करके, जिससे सिस उसे न सुन सके, गगन ने कहा—"लेकिन बादू, फ्रांसिस कहता है कि वह इसे जानता है कि सचमुच यही उसका छोटा सगा भाई है।"

तेतिल के साथ सीढ़ियाँ चढ़ना जारी रखते हुए बादल ने गम्भीरता के साथ कहा—"हाँ, मैं जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि यह उन दोनों का नया भाई बनने जा रहा है।"

नीलम ने गगन को एक हल्का-सा धक्का देते हुए, जो उसकी राह रोककर सीढ़ी पर खड़ा था, कहा—"ऊपर चलो, ऊपर चलो, मैं देखना चाहती हूँ कि आगे क्या होता है।"

जब वे सभी बादल और तेतिल के पीछे-पीछे ऊपर की ओर दौड़ पड़े तो फ्रांसिस ने कहा—"यह सेसिल ही है। मैं इसे ठीक पहचानता हूँ। यह जिस वक्त नदी में गिरा था, उस वक्त इसने ये कपड़े नहीं पहन रखे थे, जो यह इस वक्त पहने हुए है, फिर भी इसमें कोई शक नहीं कि यह सेसिल ही है।"

दादी मरीज के कमरे में बैठी हुई थीं। उनके कानों में जब फ्रांसिस की उत्तेजित और तेज आवाज पड़ी तो वे दरवाजा खोल कर बाहर निकल आयीं।

"यह सब क्या शोर मचा रखा है तुम लोगों ने?" दादी ने कहना शुरू किया ही था कि उनकी नजर तेतिल पर पड़ी, जो बादल की उँगली पकड़े ऊपर चढ़ा आ रहा था और जिसके

पीछे पीछे लड़कों का हुजूम चल रहा था तेतिल पर नजर पड़ते ही उनकी टकटकी बँध गयी, उनके मुँह से आवाज न निकली और अचानक उनका चेहरा पीला पड़ गया। लेकिन इसके पहले कि अपने ओठों तक फिसल आये शब्दों का वे उच्चारण करें, बादल ने बड़ी गम्भीरता से उन्हें अलग हट जाने का इशारा किया।

बादल ने कहा—"मैं तेतिल को सिस के पास ले जा रहा हूँ। यह उनका नया भाई बनेगा।···आओ, तेतिल।"

और दोनों सिस के कमरे में दाखिल हो गये।

लेकिन इसके बाद क्या-कुछ हुआ, यह बादल को ठीक-ठीक याद नहीं है।

उसे इतना ही याद है कि जब वह कमरे में घुसा, सिस चित लेटी हुई छत की ओर देख रही थी, गो ऐसा जान पड़ता था कि उसकी आँखों में देखने की शक्ति नहीं है। ऐसा नहीं जान पड़ता था कि अभी बाहर जो शोर गुल हो रहा था, उसका एक भी शब्द उसके कानों में पड़ सका है।

जब बादल और तेतिल उसके पायताने जाकर खड़े हुए तब उसकी नजर इन पर पड़ी। बादल अपना गला साफ करने लगा, ताकि वह ठीक तौर से उससे तेतिल का परिचय करा सके। जब वह तेतिल को गाड़ी पर लिये आ रहा था और वह गहरी नींद में सो गया था, तभी रास्ते में ही उसने एक छोटी-सी तकरीर तैयार कर ली थी, जिसे वह सिस के सामने कहना चाहता था। वह अपनी तकरीर सुनाने के लिए बिलकुल तैयार था; लेकिन उसे इसका मौका ही न मिला।

एक चीख मारकर सिस बिछौने पर उठ बैठी और उसने अपनी दोनों बाहें फैला दीं।

"सेसिल ! सेसिल !! सेसिल !!!"

"मेरी प्यारी क्लिड !" कहता हुआ तेतिल उसके बिछौने पर

बढ़ गया और गले में दोनों बाँहें डालकर उससे लिपट गया। सिस ने भी उसे अपनी दोनों बाहों से कस कर जकड़ लिया और उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली!

बादल ने यह उम्मीद तो पहले से ही पाल रखी थी कि धीरे-धीरे सिस अगर उतना नहीं तो उसी के समान तेतिल को भी जरूर प्यार करने लगेगी; लेकिन उसने यह तो सपने में भी न सोचा था कि उसे देखते ही सिस की यह हालत हो जायगी। वह भौंचक-सा होकर उन दोनों की ओर देखता रह गया।

गगन ने खुशी से काँपती हुई आवाज मे कहा—"बादल, तुम क्या अब भी नहीं समझे? तुम जिस बच्चे को लाये हो, वह इनका नया भाई नहीं है, बल्कि असली सेसिल ही है, गो, यह बात मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रही है कि यह सब कैसे हो गया!'

बादल ने अजीब गोरखधंधे में पड़े हुए की तरह कहा—"लेकिन यह असली सेसिल हो कैसे सकता है? यह तो बसती के बच्चों में से एक है।"

अब बूढ़ी दादी का भी कंठ फूटा। उन्होंने कहा—"नहीं, यह बसंती के बच्चों मे से कोई भी नहीं है। मैंने ज्यों ही इसे देखा, उसी वक्त पहचान लिया था।'

सिस इतनी देर में एक शब्द भी नहीं बोली थी, उसने किसी से यह भी नहीं पूछा था कि जिस सेसिल को उसके साथ और सभी मरा हुआ समझ रहे थे, वह कैसे उसके पास पहुँचाया गया। उसने अपने भाई को दोनों बाँहों से कसकर जकड़ रखा था। वह हौले-हौले उसकी पीठ पर हाथ फेरती जाती थी और बहुत धीमी आवाज में बीच-बीच में 'सेसिल! मेरे प्यारे सेसिल!' कहती जाती थी। लेकिन खुशी की यह अधिकता वह देर तक बर्दाश्त नहीं कर सकी। थोड़ी ही देर में उसके हाथ ढीले पड़ने लगे और देखते-ही देखते वह बेहोश होकर अपने बिछौने पर गिर पड़ी।

अब जा कर बूढ़ी दादी भी अपने आपे में आयीं। उन्होंने सब लड़कों से कहा कि वे बाहर जाकर खेलें और धीरे-धीरे कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया।

इतनी देर तक सब लड़कों का जो कौतूहल अन्दर-ही-अन्दर घुट रहा था, वह अब एक साथ फूट निकला; लेकिन बादल की समझ में अब भी यह बात न बैठ रही थी कि तेतिल ही सेसिल हो सकता है।

गगन ने सुना कि वह अपने आप बुदबुदा रहा है—"तेतिल—सेसिल, हाँ, हो सकता है कि यह वही हो।"

गगन ने कहा—"हो नहीं सकता है, है।·····चलो, हम लोग बगीचे में चलें और वहाँ हमें सब हाल सुनाओ।"

बादल के पास कहने को बहुत कुछ तो था नहीं, एक साँस में उसने सारा किस्सा बयान कर दिया। इस वक्त सब बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं था। गगन ने कहा—"मुझे तो इतनी खुशी हो रही है कि समझ में ही नहीं आता कि मैं अपने पैरों के बल खड़ा हूँ या सिर के।"

गगन की बात पर सब बच्चे हँस पड़े।

अचानक गगन ने कहा—"ठहरो, मैं जरा देख आऊँ, अब सिस की तबीयत कैसी है।"

और जरा देर बाद ऊपर की खिड़की से पुकार कर उसने कहा—"सिस की बेहोशी दूर हो गयी है। वह सेसिल के साथ मजे में खेल रही है। सेसिल खाना खाने की तैयारी कर

रहा है और मैं इस बात का पता लगाने राजरप्पा जा रहा हूँ कि वह वहाँ कैसे पहुँचा।

खिड़की से वह ओझल हो गया और क्षणभर बाद सड़क पर और बच्चों से आ मिला। उसने कहा—"मैं घोड़ी पर सवार होकर बसंती के पास सारा किस्सा जानने के लिए जा रहा हूँ। इसके अलावा उसको भी इस बात की खबर दे देनी जरूरी है। जाने बेचारी अब तक इसके लिए कहाँ-कहाँ की खाक छान आयी होगी।"

गगन इधर बातें कर रहा था, इधर घोड़ी पर जीन कस रहा था। पलक मारते वह उछल कर घोड़ी पर जा बैठा और एँड़ लगा कर हवा हो गया।

नीलम ने कहा—"जब तक गगन लौटेगा, तब तक हम लोगों को क्या करना चाहिए।"

बादल ने कहा—"मुझे तो बड़ी भूख लगी है—मैं कुछ खाने-पीने की फिराक में जाता हूँ।"

नीलम ने कहा—"जरूर तुम्हें भूख लगी होगी। तुम खाना खा आओ, तब तक हम लोग तुम्हारा इन्तजार करेंगे। तुम आकर फिर सारी बातें विस्तार के साथ हम लोगों को बतलाना।"

बादल इस बात के लिए उनसे ज्यादा राजी था।

लगभग डेढ़ घण्टे के अन्दर गगन वापस आ गया और तब उसके पास और बच्चों से कहने के लिए एक खासी दिलचस्प कहानी थी।

गगन का खयाल सच था कि बसंती और उसके घरवाले सेसिल के लिए परेशान होंगे। घण्टों से बसंती, उसका पति और उसके बच्चे सेसिल को चारों ओर ढूँढ़ रहे थे। गगन से उन्हें यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि न सिर्फ सेसिल राजी-खुशी से है, बल्कि वह अपने परिवार में पहुँच गया है।

नीलम ने पूछा—"लेकिन सेसिल उन लोगों के पास पहुँचा कैसे ?"

गगन को अपनी बात के बीच किसी का रोकना अच्छा न लगता था। उसने झुँझलाकर कहा—"वही तो मैं कहने जा रहा हूँ। तुम बीच में क्यों फटी पड़ती हो ?"

नीलम चुप लगा गयी। गगन ने फिर अपना किस्सा शुरू किया। यह बात तो अब तक वे सभी जान ही गये थे कि सेसिल डूबा नहीं था। असल में हुआ यह था कि सेसिल जब पानी में गिरा तो डूब गया। फ्रांसिस और सिस ने ज्यों ही उसे डुबकी खाते देखा, वे दोनों मदद के लिए चिल्लाते हुए घर की ओर दौड़ गये। उधर वे गये और इधर सेसिल पानी पर उतराया। उस दिन दामोदर में बाढ़ आयी हुई थी, धारा खूब तेज चल रही थी। सेसिल तेज धारा में दूर बह गया और सिस तथा फ्रांसिस जब दो-एक आदमियों को लेकर वापस आये तो सेसिल का कहीं पता न चला।

अब फिर नीलम का धीरज छूट गया। उसने कहा—"इतनी सारी बातें तो हम लोग जानते ही हैं; हमें तो यह बतलाओ कि आखिर सेसिल का क्या हुआ ?"

और वक्त होता तो बार-बार के टोकने से गगन बिगड़ खड़ा होता, लेकिन इस वक्त वह अपनी कहानी कहने में इतना मशगूल था कि उसने इस बात का ज्यादा खयाल नहीं किया।

"सेसिल बहकर राजरप्पा के सामने आ लगा। वहाँ नदी में पेड़ काटकर गिरा दिये गये थे, जिनकी डालियाँ और पत्ते पानी में अड़े हुए थे। सेसिल वहाँ आकर या तो अटक गया या उसने पेड़ की डालियों को पकड़ लिया। इस तरह उसकी जान तो जरूर बच गयी, लेकिन पत्तों में वह इस तरह छिपा रहा कि उसे खोजनेवाले उसका पता न पा सके। लगभग दस घण्टों तक वह

उस हालत में पड़ा रहा और बेहोश हो गया। तब तक नदी का पानी-और बढ़ आया था, जो उसे डालियों से छुड़ाकर आगे बहा ले गया। उस समय बसंती का एक भाई नदी में मछलियाँ मार रहा था। उसने एक सुन्दर बच्चे को बहता देखकर उसे पानी से बाहर निकाला। पहले तो उसने उसे मरा हुआ समझा, लेकिन कलेजे की धुकधुकी चलती देखकर तरह-तरह के उपचारों से वह उसे होश में ले आया। उसके घर में कोई औरत नहीं थी और उसे कल दूसरे गाँव जाना था, इसलिए पिछली शाम को, जब हम लोग राजरप्पा से लौटे, उससे थोड़ी देर बाद वह सेसिल को बसंती के यहाँ दे गया। आज बादल बाबू उसके यहाँ पहुँचे और बिना बसंती से कहे-सुने उसे उड़ा लाये।"

नीलम ने गम्भीरता से कहा—"ओः, बेचारे सेसिल को कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ीं!"

बादल बोला—"हाँ, और मैंने उसे बचाया है!"

गगन ने कहा—"मैं तो नहीं समझता कि तुमने ही इस मामले में सबसे ज्यादा बहादुरी दिखलायी है।"

नीलम बोली—"असल में तो सेसिल को पेड़ की डालियों ने बचाया और तब बसंती का भाई उसे नदी में से निकालकर लाया!"

गगन ने कहा—"और बादल ने उसे उसके भाई-बहनों से ला मिलाया।"

× × ×

कुछ घण्टों के बाद सिस के पिता भी आ पहुँचे। यहाँ आकर उन्होंने पाया कि न सिर्फ सिस ही खतरे से बाहर हो चुकी है, बल्कि उनका खोया हुआ बच्चा भी हिफाजत से उनके पास पहुँच चुका है।

इस घटना से उन्हें इतनी खुशी हुई और उन्होने बादल के

प्रति इतनी-इतनी कृतज्ञता प्रकट की कि गगन को डर होने लगा कि इस तारीफ से बादल का कहीं सिर न फिर जाय।

इसके बाद सिस जल्दी ही अच्छी हो गयी और उसकी माँ की हालत सुधरते भी देर न लगी। तब एक दिन गगन के पिता-माता की इजाजत से सिस के पिता ने सब बच्चों को अपने यहाँ दावत दी। सभी बच्चे वहाँ जाकर कई दिन रहे। उन्होंने नदी-किनारे खूब पिकनिक किये और जंगलों में घूमते फिरे, जिसके पेड़ों की डालियों ने सेसिल की जान बचायी थी। अब फ्रांसिस और सिस दोनों ही इतने खुश थे कि गगन वगैरह को इस बात पर विश्वास भी न होता था कि ये ही वे दोनों लड़के हैं, जो बूढ़ी दादी की खिड़की पर बैठे उदास आँखों से दिन-दिन भर सूने आसमान की ओर ताकते रहे थे।

